कोठे वाली लड़कियों के प्रायश्चित की रोचक घटनाएं

जेड. के

एक धंधे वाली की एक कुत्ते को पानी पिलाने पर मुक्ति

हज़रत मुहम्मद ने फरमाया, एक वेश्या को अल्लाह ने केवल इसलिए क्षमा कर दिया कि वह एक कुत्ते के पास से गुजर रही थी, जो एक कुएं के पास खड़ा था और प्यास से हांफ रहा था। ऐसा लग रहा था कि वह प्यास से मर जाएगा। औरत ने अपना मोज़ा निकाला और दुपट्टे में बाँध कर कुएं से पानी निकाला और कुत्ते को पिला दिया। इसी बात पर अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया।
सही अल-बुख़ारी हदीस नंबर: 3321
हज़रत मुहम्मद ने फ़रमाया। एक कुत्ता एक कुएं के चारों तरफ़ चक्कर काट रहा था जैसे प्यास की से उस की जान निकल जाने वाली हो, कि बनी इसराईल की एक वेश्या ने उसे देख लिया। उस औरत ने अपना मोज़ा उतार दुपट्टे में बाँध कर कुएं से पानी निकाला और कुत्ते को पिला दिया। इसी बात पर अल्लाह ने उसे नर्क से मुक्ति देदी। अल-बुख़ारी हदीस नंबर: 3467

मशहूर गईका के पश्चाताप की कहानी

बसरा शहर में एक बेहद सुंदर औरत रहा करती थी। लोग उसे शावाना के नाम से जानते थे। ज़ाहिरी सुंदरता के साथ साथ उस की आवाज़ भी बहुत सुरीली थी। अपनी ख़ूबसूरत आवाज़ की वजह से वो गायकी और नौहागरी (विलाप करने) में मशहूर थी। बसरा शहर में ख़ुशी और ग़मी की कोई भी सभा उस के बग़ैर अधूरी मानी जाती थी। यही वजह थी कि वह बहुत मालदार हो गई थी। वो बसरा शहर में पापी औरतों के लिए एक रोल मॉडल थी। उस का रहन सहन मालदारों जैसा था, वो महंगे कपड़े पहनती और कीमती गहनों से बनी संवरी रहती।

एक दिन वो अपनी रूमी और तुर्की दासियों के साथ कहीं जा रही थी। रास्ते में उस का गुज़र हज़रत सालिह के घर के क़रीब से हुआ। हज़रत सालिह, अल्लाह के बरगुजीदा बंदों में से थे। आप एक सच्चे और श्रद्धा पूर्वक मुसलमान थे। आप अपने घर में लोगों को प्रवचन देते थे। आपका प्रवचन इतना प्रभावशीलता होता की लोग रोने लगते और बड़ी ज़ोर ज़ोर से आह-ओ-बका शुरू कर देते और अल्लाह के ख़ौफ़ (डर) से उनकी आँखों से आँसू निकलने लगते। जब शावाना नामी वो औरत वहां से गुज़रने लगी तो उसने घर से विलाप की आवाज़ें सुनें। आवाज़ें सुनकर उसे बहुत ग़ुस्सा आया। वो अपनी दासियों से कहने लगी "ताज्जुब की बात है कि यहां विलाप हो रहा है और मुझे उस की ख़बर तक नहीं दी गई"।

फिर उसने एक दासी को घर के हालात मालूम करने के लिए अंदर भेजा। वो लौंडी अंदर गई और अंदर के हालात देखकर उस पर भी अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हो गया और वो वहीं बैठ कर प्रवचन सुनने लगी। जब वो वापिस ना आई तो शावाना ने काफ़ी इंतज़ार के बाद दूसरी और फिर तीसरी लौंडी को अंदर भेजा, मगर वो भी वापिस न लौटी।

फिर उसने चौथी नौकरानी को अंदर भेजा जो थोड़ी देर बाद वापिस लौट आई और उसने बताया कि "घर में किसी के मरने पर मातम नहीं हो रहा बल्कि लोग अपने गुनाहों पर और अल्लाह के ख़ौफ़ से रो रहे हैं।" शावाना ने ये सुना तो हंस दी और उनका मज़ाक़ उड़ाने की नीयत से घर के अंदर दाख़िल हो गई। लेकिन क़ुदरत को कुछ और ही मंजूर था। जैसे ही वो अंदर गई अल्लाह ने उस के दिल को फेर दिया। जब उसने हज़रत सालिह को देखा तो दिल में कहने लगी: "अफ़सोस मेरी तो सारी जिंदगी बर्बाद हो गई, मैंने अनमोल जीवन गुनाहों में बर्बाद कर दिया, वो (अल्लाह) मेरे गुनाहों को क्योंकर माफ़ फ़रमाएगा? "इन्ही ख़्यालात से परेशान हो कर उसने हज़रत सालिह से पूछा: "ए इमाम क्या अल्लाह नाफ़रमानों और पापियों के गुनाह भी माफ़ फ़र्मा देता है? "उन्हों ने जवाब दिया:"हाँ ये प्रवचन सब उन्हीं लोगों के लिए ही तो है ताकि वो सीधे रास्ते पर आ जाएं। "इस पर भी उस की तसल्ली ना हुई तो वो कहने लगी "मेरे पाप तो आसमान के सितारों और समुंद्र के झाग से भी ज़्यादा हैं। "आपने फ़रमाया "कोई बात नहीं अगर तेरे पाप शावाना से भी ज़्यादा हों तो भी अल्लाह माफ़ फ़र्मा दे गा। "ये सुनकर वो चीख़ पड़ी और रोना शुरू कर दिया और इतना रोई कि उस पर बेहोशी तारी हो गई। थोड़ी देर बाद जब उसे होश आया तो कहने लगी "हज़रत मैं ही वो शावाना हूँ जिसके गुनाहों की मिसालें दी जाती हैं। "फिर उसने अपने महंगे कपड़े और गहने उतार कर पुराना से कपड़े पहन लिये और पापों से कमाया हुआ सारा माल गरीबों में दान कर दिया और अपने तमाम ग़ुलाम और दासियों को आज़ाद कर दिया।

फिर अपने घर में बैठ गई। इस के बाद वो हर समय अल्लाह, की इबादत में मसरूफ़ रहती और अपने गुनाहों पर रोती रहती और उनकी माफ़ी माँगती रहती। रो-रो कर अल्लाह की बारगाह में इल्तिजा करती: "ए तौबा करने वालों से मुहब्बत करने वाले और पापियों को माफ़ फ़रमाने वाले मुझ पर रहम फ़र्मा, मैं कमज़ोर हूँ तेरे अज़ाब और दंड को बर्दाश्त नहीं कर सकती,

तो मुझे अपने अज़ाब से बचा ले और मुझे क्षमा करदे।' उसने उसी हालत में चालीस साल ज़िंदगी बसर की और इंतकाल कर गई। *(हिकायात अल- सालिहीन पृ. 74)*

एक कोठे वाली जो सात संतों की माँ बनी

हज़रत मूसा के ज़माने में एक औरत थी जो कि बेहद सुंदर थी लेकिन बहुत बदचलन भी थी। वो इतनी ख़ूबसूरत थी कि कोई भी मर्द उसे देख कर, उसे दिल दे बैठता था। उसने अपने लिए एक महल बनाया, महल में तख़्त बनाया और फिर वो तख़्त पर बैठ जाया करती और उस के आस-पास शौक़ीन मर्द ही मर्द होते थे। एक दिन वो अपने महल में तख़्त पर बैठी थी कि एक नौजवान का वहां से गुज़र हुआ जो कि बहुत इबादत गुज़ार था और उस की गिनती बड़े इबादतगुजारों और संन्यासियों में होती थी। जब उस नौजवान की उस औरत पर नज़र पड़ी, तो उसे दिल दे बैठा। जब वो वापिस गया तो इबादत में किसी भी तरह उस का दिल ना लगा। उसने हर मुमकिन कोशिश की उस को भूलने की लेकिन उस औरत की मुहब्बत को अपने मन से न निकाल सका। बहुत कोशिश करने के बाद जब वो किसी भी तरह कामयाब ना हो सका तो उसने इतने पैसे जमा किए जितने वो औरत लिया करती थी और औरत के पास चला गया। जब वो औरत के पास पहुंचा और तख़्त के क़रीब बैठा तो उस के दिल में ख़्याल आया, मैंने अपनी सारी ज़िंदगी अल्लाह के डर और अल्लाह की इबादत में गुज़ार दी है और अगर मैं आज ये काम करते हुए मर गया तो मैं अल्लाह को क्या मुंह दिखाऊँगा। बस ये ख़्याल आना था कि उस का शरीर काँपने लगा। उसने उस औरत से कहा कि मुझे जाना है मुझे कोई ज़रूरी काम है। औरत ने कहा चले जाओ लेकिन जिस काम से यहां आए हो वो तो करते जाओ, लेकिन नौजवान ने इनकार कर दिया। औरत के बार-बार कहने पर उसने कहा कि मैंने अपनी सारी ज़िंदगी अल्लाह की इबादत में गुज़ारी है और मैं ये काम कर के अल्लाह को नाराज़ नहीं कर सकता और वहां से चला गया। जब वो वहां से चला गया तो औरत ने सोचा मैं इतनी हसीन और

ख़ूबसूरत हूँ कि आज तक जो मर्द भी मेरे क़रीब आया वह मेरे फरेब से बच न सका, लेकिन ये कैसा नौजवान था जिसके दिल में अल्लाह का इतना डर था कि उसने मुझ जैसी ख़ूबसूरत औरत को छोड़ दिया और चला गया। जब इस ख़्याल ने उसे बार-बार झंझोड़ा तो उसने ये सोच लिया कि आज के बाद में ये काम नहीं करूँगी और अल्लाह से तौबा करूँगी। वो हज़रत मूसा के पास गई। वो अल्लाह के नबी हैं, मैं उनसे जा कर मालूम करूंगी कि क्या मेरे जैसी पापी औरत के लिए भी अल्लाह के पास तौबा का कोई रास्ता है? जब वो हज़रत मूसा के पास गई तो हज़रत मूसा एक सभा में लोगों को प्रवचन दे रहे थे। औरत ने उस सभा में से किसी आदमी को बुलाया और कहा कि हज़रत मूसा से कहो कि फलां औरत आपसे मिलना चाहती है। उस बेवक़ूफ़ ने जा कर भरी सभा में ज़ोर से कहा कि ए मूसा, फलां औरत आपसे मिलना चाहती है। अब वो तो नामी गिरामी औरत थी, मूसा को चढ़ा ग़ुस्सा और मूसा ने सख़्ती से कहा, उस से कहो, चली जाये यहां से, मैं उस से मिलना नहीं चाहता। उस बंदे ने जाकर औरत को पैग़ाम दिया कि मूसा कहते हैं कि मैं उस औरत से नहीं मिलना चाहता, उस से कहो कि चली जाये यहां से। वो औरत टूटे दल के साथ वहां से वापिस आई और रास्ते में ज़ार-ओ-क़तार रोती आई और दिल में ये सोचती आई कि शायद मैं इतनी बुरी हूँ कि अल्लाह का नबी भी मुझसे नहीं मिलना चाहता। अब तो मेरी बख़शिश किसी तरह भी नहीं हो सकती। घर आकर उसने अपने आपको कमरे में बंद कर लिया। उसे और तो कुछ पता नहीं था लेकिन उसने कहीं से सुना हुआ था कि जब अल्लाह को मनाना हो तो सज्दे में अल्लाह से माफ़ी माँगो। वो सजदे में गिरी, रोती रही, गिड़गिड़ाती रही, अल्लाह से माफियां माँगती रही, कि इतनी देर में दरवाज़े पर दस्तक हुई। उसने समझा कि शायद कोई मर्द आया है मुझसे बुराई करने के लिए क्योंकि मर्दों का आना जाना तो उस के पास लगा रहता था। उसने कहा कुछ भी हो जाये मैं आज दरवाज़ा नहीं खोलूंगी, लेकिन दरवाज़े की दस्तक

और तेज़ होती गई। उसने आखिर हिम्मत करके दरवाज़ा खोला तो सामने हज़रत मूसा खड़े हुए थे। उस औरत ने हैरानी से पूछा कि ए मूसा, ए अल्लाह के नबी आप मेरे दरवाज़े पर कैसे? हज़रत मूसा ने कहा कि, दरअसल जब तुम मेरे पास आई थीं तो मैं लोगों को प्रवचन दे रहा था और मैंने ख़ुद तुमसे मिलने से इनकार कर दिया था। लेकिन जब तुम चली गईं तो अल्लाह का फ़रिश्ता जिब्राईल मेरे पास अल्लाह का संदेश लेकर आया कि अल्लाह पाक फ़रमा रहा है, ए मेरे पैग़ंबर, मेरी एक बंदी आपसे मेरा रास्ता पूछने आई थी। आपने तो उसे डाँट ही दिया। और मुझसे अल्लाह ने कहा है कि तुम उस के घर जाओ और उस से जा कर कहो कि आज जो तुमने तौबा की है तो अल्लाह तुमसे इतना ख़ुश है कि अल्लाह ने तुम्हारे सारे पाप धो दिए। अगले दिन उस औरत ने सोचा कि अब मेरा इस बस्ती में रहना बहुत मुश्किल है क्योंकि यहां पर अगर मैं रहती हूँ तो यहां पर तमाम लोग मुझसे बुराई करने के लिए आते रहेंगे। और मैं चूंकि तौबा कर चुकी हूँ तो मुझे इस बस्ती को छोड़ देना चाहिए। चुनांचे उस औरत ने उस बस्ती को छोड़ा और उस नौजवान को तलाश करने निकल गई जिसकी वजह से उसने तौबा की थी। उस नौजवान को ढूंढने के बाद जब उस के घर पहुंची तो उसे बताया गया कि वो लड़का इबादत कर रहा है और जैसे ही फ़ारिग़ होगा उस औरत की उस से मुलाक़ात करवा दी जाएगी। वो औरत घर के आंगन में बैठ गई और उस नौजवान का इंतज़ार करने लगी। जैसे ही वो नौजवान इबादत से फ़ारिग़ हो कर कमरे से बाहर निकला और आंगन में उस औरत को बैठे देखा, उस के दिल में ख़्याल आया कि शायद ये यहां पर भी मेरा ईमान ख़राब करने आ गई, और मैंने इसे इतनी मुश्किलों से अपने दिमाग़ से निकाला था। अब सब में मेरी बदनामी होगी। इस डर से वो नौजवान वहीं पर गिरा और मर गया। औरत ने उस नौजवान के घर वालों को बताया कि पहले मैं ऐसी थी, ये नौजवान मेरे पास आया था और उस की नेकी की वजह से मुझे तौबा की तौफीक नसीब हुई। मैंने अपनी पहले

वाली ज़िंदगी से तौबा करली है। मैं यहां इस नौजवान से मिलने आई थी कि शायद ये मुझसे निकाह कर ले। उसे बताया गया कि इस नौजवान का एक बड़ा भाई भी है उस से पूछ लेते हैं और अगर वो आपसे निकाह कर लेता है तो हमें कोई एतराज़ नहीं। चुनांचे उस औरत की शादी उस नौजवान के बड़े भाई से कर दी गई और अल्लाह ने उस औरत को सच्ची तौबा करने का सिला ये दिया, कि अल्लाह ने उस औरत को 7 बेटे अता किए और वो सातों बेटे बाद में बनी इसराईल के बहुत बड़े अल्लाह वाले (संत) बने।[1]

---

[1] https://dailypakistan.com.pk/21-Sep-2017/646551 retrieved 27/10/2022.

दिल्ली की तवायफों की कहानी

ये लड़कियां सबसे बेनयाज़, अपनी अदाओं से सबको घायल करती गुज़र रही थीं कि हज़रत शाह मुहम्मद इस्माईल की नज़र उन पर पड़ी। हज़रत ने अपने साथियों से पूछा ये कौन हैं? साथियों ने बताया कि हज़रत ये तवायफ़ें हैं और किसी नाच रंग की महफ़िल में जा रही हैं। हज़रत शाह साहिब ने फ़रमाया, अच्छा ये तो मालूम हुआ, लेकिन ये बताओ कि ये किस मज़हब की मानने वाली हैं? उन्होंने बताया कि जनाब ये इस्लाम ही को बदनाम करने वाली हैं। अपने आपको मुसलमान कहती हैं। शाह साहिब ने जब ये बात सुनी तो फ़रमाया: मान लिया कि बद-चलन और बदकिर्दार ही सही, हुईं तो हमारी बहनें ही। लिहाज़ा हमें उन्हें नसीहत करनी चाहिए, मुमकिन है कि गुनाहों से बाज़ आजाऐं। साथियों ने कहा उन पर नसीहत क्या खाक असर करेगी? बल्कि उनको नसीहत करने वाला तो उलटा ख़ुद बदनाम हो जाएगा। शाह साहिब ने फ़रमाया तो फिर क्या हुआ मैं तो ये फ़रीज़ा अदा कर के रहूँगा चाहे कोई कुछ समझे! साथियों ने अर्ज़ किया। हज़रत आपका उनके पास जाना सही नहीं है। आपको पता है कि शहर में चारों तरफ़ आपके विरोधी हैं। जो आपको बदनाम करने का कोई मौक़ा नहीं छोड़ते। आपने फ़रमाया मुझे कोई परवाह नहीं। मैं उन्हें ज़रूर नसीहत करने जाऊँगा। इस के बाद आप नसीहत करने के लिए उठ खड़े हुए। दरवेशों जैसे कपड़े पहने और अकेले नायिका की हवेली के दरवाज़े पर पहुंच गए और सदा लगाई। अल्लाह वालियों! दरवाज़ा खोलो और फ़क़ीर की सदा सुनो। आपकी आवाज़ सुनकर कुछ लड़कियां आईं। उन्होंने दरवाज़ा खोला तो देखा बाहर दरवेश सूरत बुज़ुर्ग खड़े हैं। उन्होंने समझा कि ये कोई भिखारी है सो उन्होंने कुछ रुपये ला कर थमा दिए, लेकिन हज़रत ने अंदर जाने का इसरार किया और फिर अंदर चले गए! शाह साहिब ने देखा कि चारों तरफ़

शमाएँ और कंदीलें रोशन हैं। तवायफ़ें, तबले और ढोलक की थाप पर थिरक रही हैं। उनकी पाज़ेबों और घुंघरुओं की झनकार ने अजीब समां बांध रखा है। ज्यों ही नायिका की निगाह उस फ़क़ीर पर पड़ी उस पर हैबत तारी हो गई। वो जानती थी कि उस के सामने फ़क़ीराना कपड़ों में भिखारी नहीं, बल्कि शाह इस्माईल खड़े हैं। वो जो हज़रत शाह वली अल्लाह के पोते और शाह अब्दुल अजीज, शाह रफ़ी उद्दीन और शाह अबदुलक़ादिर के भतीजे हैं। नायिका तेज़ी से अपनी कुर्सी से उठी और आदब के साथ उनके सामने जा खड़ी हुई। बड़े अदब से अर्ज़ किया: हज़रत आपने हम पापियों के पास आने का कष्ट क्यों किया? आपने पैग़ाम भेज दिया होता, तो हम ख़ुद आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जातीं। आपने कहा बड़ी-बी तुमने सारी ज़िंदगी लोगों को राग और सुर सुनाया है। आज ज़रा कुछ देर हम फ़क़ीरों की सदा भी सुन लो! जी सुनाइए। हम पूरे ध्यान से आप का प्रवचन सुनेंगे! ये कह कर उसने तमाम तवायफों को पाज़ेबें उतारने और तबले ढोलकिया बंद कर के प्रवचन सुनने का हुक्म दिया। वो इखट्टी हो कर बैठ गईं। शाह इस्माईल ने कुरान शरीफ़ निकाल कर सूरत अलतीन पढ़ी। आपकी आवाज़ इस क़दर सुरीली थी कि तवाइफ़ें बेख़ुद हो गईं। इस के बाद आपने उस सूरत का दिल नशीन अंदाज़ में तर्जुमा बयान करना शुरू कर दिया! उनका ये ख़िताब ज़बान का कानों से ख़िताब ना था, बल्कि दिल का दिलों से और रूह का रूहों से ख़िताब था। ये तकरीर दरअसल अल्लाह का करिश्मा था जो शाह साहिब जैसे सच्चे दर्दमंदों के दिलों पर उतरता है। जब तवायफों ने शाह साहिब की दिल नशीन अंदाज़ में सूरत का मतलब सुना तो उन पर लर्ज़ा तारी हो गया। रोते-रोते उन की हिचकियां बंध गईं। शाह साहिब ने जब उनकी आँखों में आँसुओं की झड़ियां देखीं तो उन्होंने प्रवचन का रुख तौबा की तरफ़ मोड़ दिया और बताया कि जो कोई पाप कर बैठे, लेकिन अल्लाह से उस की माफ़ी मांग ले, तो अल्लाह बड़ा माफ करने वाला है। वो माफ़ भी कर देता है, बल्कि उसे तो अपने गुनहगार

और पापी बंदों को माफ करने में बेहद ख़ुशी होती है। आपने तौबा के इतने फायदे बयान किए कि उनकी सिसकियाँ बंध गईं। किसी ज़रिये से शहर-वालों को उस प्रवचन की ख़बर हो गई। वो दौड़े दौड़े आए और मकानों की छतों, दीवारों और गलीयों में खड़े हो कर तकरीर सुनने लगे। जहां तक निगाह जाती लोगों के सर ही सर नज़र आते! शाह साहिब ने उन्हें उठ कर वुज़ू करने और दो रकात नमाज़ अदा करने की नसीहत की। जब वो वुज़ू कर के क़िबला रुख खड़ी हुईं और नमाज़ के दौरान सज्दों में गिरीं तो शाह साहिब ने एक तरफ़ खड़े हो कर अल्लाह के सामने हाथ फैला दिए और दुआ की। ए अल्लाह, ए दिलों का भेद जानने वाले मैं तेरे हुक्म पर इतना ही कुछ कर सकता था। ये सज्दों में पड़ी हैं, तू उनके दिलों को पाक कर दे, गुनाहों को माफ़ कर दे और उन्हें नेक बना दे तो तेरे लिए कुछ मुश्किल नहीं, वर्ना तुझ पर किसी का ज़ोर नहीं। मेरी फ़र्याद तो ये है कि उन्हें नेक बनने की हिदायत अता फ़र्मा उन्हें नेक बंदियों में शामिल फ़र्मा! इधर शाह साहिब की दुआ ख़त्म हुई और इधर उनकी नमाज़। वो इस हाल में उठीं कि उनके दिल पाक हो चुके थे अब शाह साहिब ने नेक चलन ज़िंदगी गुजारने के फायदे और निकाह की जरूरत बयान करनी शुरू कर दी और इस मौज़ू को इस क़दर अच्छी तरह से बयान किया कि तमाम तवायफ़ें अपने पापों भरे जीवन पर पशचाताप करने लगीं और निकाह पर राज़ी हो गईं। चुनांचे उनमें से जवान औरतों ने निकाह कर लिए और उधेड़ उम्र वालियों ने घरों में बैठ कर मेहनत मज़दूरी से गुज़ारा शुरू कर दिया।

कहते हैं कि उनमें से सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत मोती नामी औरत को जब उस के पहले जानने वालों ने शरीफ़ाना हालत और सादा लिबास में अल्लाह के नेक बंदों के घोड़ों के लिए हाथ वाली चक्की पर दाल पीसते देखा तो पूछा वो ज़िंदगी बेहतर थी जिसमें तू रेशम और शहनील के कपड़ों में शानदार लगती थी और तुझ पर सोना चांदी निछावर होते थे या ये ज़िंदगी बेहतर है जिसमें तेरे हाथों पर चक्की चलाने से छाले पड़े हुए हैं? कहने

लगी अल्लाह की क़सम मुझे पाप की ज़िंदगी में कभी इतना आनंद नहीं आया जितना अल्लाह के नेक बंदों के लिए चक्की पर दाल दलने से आता है। (ये क़िस्सा तज़किरा अलशहीद में है)

एक अय्याश लड़का जब एक वेश्या को घर लाया

हज़रत मुहम्मद ने कई यह वाकया सुनाया। फरमाते थे कि, बनी इसराईल में किफ़ल नामी एक शख़्स था जो हमेशा रात-दिन बुराई में डूबा रहता था। कोई पाप ऐसा ना था जो उसने छोड़ा हो। दिल की कोई ऐसी ख्वाहिश ना थी जो उसने पूरी ना की हो। एक बार उसने एक औरत को साठ (60) दीनार देकर बदकारी के लिए आमादा किया। जब वो तनहाई में अपने बुरे काम के इरादे से आया तो वो नेक औरत डर से थर्राने लगी। उस की आँखों से आँसुओं की झड़ियां लग गईं। चेहरे का रंग उड़ गया, रौंगटे खड़े हो गए। किफ़ल ने हैरान हो कर पूछा इस डर और दहशत की क्या वजह है। उस शरीफ़ लड़की ने अपनी लड़खड़ाती ज़बान से जवाब दिया। मुझे अल्लाह के दण्ड का ख़्याल है। इस ग़लीज़ और गंदे काम को हमारे पैदा करने वाले अल्लाह ने हराम (वर्जित) क़रार दिया है। ये बदकारी हमारे मालिक के सामने हमें लज्जित करवाएगी। यह अपने मालिक की नमकहरामी है। वल्लाह मैंने कभी भी अल्लाह की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। हाय मेरी भूक, ग़रीबी, मजबूरी, कम हिम्मती ने ये दिन दिखाया कि जिस मालिक (अल्लाह) की दासी हूँ, उसी के सामने उस के देखते हुए उस की ना-फ़रमानी करने पर आमादा हूँ, और अपनी इज्जत बेचने और अछूत दामन पर धब्बा लगाने को तैयार हो गई हूँ। लेकिन ए किफ़ल, अल्लाह की क़सम, अल्लाह का ख़ौफ़ मुझे घुलाए जा रहा है। उस के दण्ड का खटका कांटे की तरह खटक रहा है। हाय आज की दो-घड़ी का मज़ा सदियों खून थुकवाए गा और यातनाएं दिलवाए गा। ए किफ़ल अल्लाह के लिए इस बदकारी से बाज़ आ और अपनी और मेरी जान पर रहम कर। आख़िर

अल्लाह को मुंह दिखाना है। उस नेक गुणी, पवित्र महिला की प्रभावशाली तक़रीर और सच्ची दर्द मंदी ने किफ़ल पर गहरा असर डाला। और चूंकि जो बात सच्ची होती है दिल ही में अपना घर करती है। सो ऐसा ही किफ़ल को महसूस हुआ। वो अपने अंजाम पर ग़ौर करके अपने पापों को याद करके रो दिया और कहने लगा। ए पाक दामन औरत! तू केवल एक पाप, वो भी मजबूरी में करने पर अल्लाह के ख़ौफ़ से काँप रही है। हाय मेरी तो सर जीवन ही बदकारियों और पापों में गुजर गया। मैंने अपने मुंह की तरह अपने क्रम और आमाल-नामे को भी स्याह कर दिया। अल्लाह के ख़ौफ़ को कभी पास भी ना फटकने दिया। अल्लाह के दण्ड की कभी भूले से भी परवाह ना की। हाय मेरा मालिक मुझसे ग़ुस्सा होगा। उस के दण्ड के फ़रिश्ते मेरी ताक में होंगे। जहन्नुम की क्रोध वाली निगाहें मेरी तरफ़ होंगे। मेरी क़बर में साँप बिच्छू मेरे इंतज़ार में होंगे। मुझे तो तुझ से ज़्यादा डरना चाहिए। ना जाने कयामत में मेरा क्या हाल होगा। ए नेक औरत गवाह रह, मैं आज तेरे सामने सच्चे दिल से तौबा करता हूँ कि आइन्दा अल्लाह की नाराजगी का कोई काम ना करूँगा। बुराइयों के पास ना फटकूँगा। मैंने वो पैसे तुम्हें अल्लाह के वास्ते दिए और मैं अपने नापाक इरादे से हमेशा के लिए बाज़ आया। फिर रोता रहा और अल्लाह के सामने माफी मांगता रहा। और रो-रो कर अपने कर्मों की स्याही धोता रहा। दुआएं करता रहा कि या अल्लाह मेरी पापों को माफ फ़र्मा। मुझे अपनी पनाह में मैं छिपा ले। मुझे अपने दण्ड से बचा ले। हज़रत मुहम्मद फ़रमाते हैं कि उसी रात किफ़ल का इंतिक़ाल हो गया। सुबह को लोगों ने उस के दरवाज़े पर क़ुदरतन लिखा हुआ पाया। “अल्लाह ताला ने किफ़ल के पाप माफ़ करदिए”। (तिरमिज़ी) (सही इस्लामी वाक़ियात, सफ़ा नंबर103-106)।

एक धंधे वाली के प्रायश्चित की अनमोल दास्तान

मेरी कहानी एक तवाइफ़ की कहानी है। मगर मैं वो सब नहीं बताऊँ गी जो आम तौर से इस विषय पर लिखी जाने वाली कहानियों में होता है। मैं वो बताऊंगी जो मेरे ऊपर उस समय गुज़री जब मैंने तौबा कर ली और पाप का रास्ता छोड़ कर शरीफ़ाना ज़िंदगी गुज़ारने का फ़ैसला किया। हम एक कोठे में रहा करते थे। मेरे साथ की लड़कियां और औरतें गपशप में या ज़नाना कामों में समय गुज़ारतीं। उस समय मैं किसी कोने में डाइजेस्ट लेकर बैठी होती। एक दिन मैंने एक अल्लाह वाले की कहानी पढ़ी। वो डाकू थे और एक रात डाका मारने जा रहे थे कि उनके कानों में कुरान की आयत पड़ी। जिसका मतलब कुछ यूं है, 'क्या पापियों के लिए अभी समय नहीं आया कि वो तौबा कर लें और अल्लाह की याद के लिए उसके आगे झुक जाएँ? (कुरान 57:16) वह डाकू यह सुन कर कांप गए और रोते हुए तौबा कर ली और अल्लाह वाले बन गए। ये क़िस्सा पढ़ कर मेरी हालत अजीब सी हो गई। मैं डाकू नहीं हूँ मैंने किसी को लूटा नहीं है। लेकिन क्या मैं पाप का जीवन नहीं गुजार रही हूँ। बे-इख़्तियार मेरे आँसू बहने लगे और मैंने अल्लाह से कहा 'तेरी ये बंदी ऐसी गुनाहगार है कि खुद से तोबा भी नहीं कर सकती'। हाँ अपने को दोषी ज़रूर समझती है। अब तूही इसे गुनाहों से बचा। दूसरों को ज़रा देर से एहसास हुआ कि मैं रो रही हूँ। और फिर सब मेरे आसपास जमा हो गईं। बात अमीर बेगम तक पहुंच गई। अमीर बेगम उस कोठे की मालकिन थी। और हम उसी के लिए काम करते थे। उसने मुझे बुला लिया। शादो, क्या बात है, क्यों रो रही है। मैं नहीं जानती, बाजी। अमीर बेगम बहुत कठोर औरत थी जैसा कि उस जैसी औरत को होना

चाहिए। अगर कोई लड़की या औरत धंधे से इनकार करती तो वो उस की खाल उतरवा दिया करती थी। इस लिए मैं बता भी नहीं सकती के डर के मारे मेरे अंदर की क्या हालत थी। एकाएक वो नरम हो गई। किसी ने कुछ कहा है बता, मैं इस की खाल खिंचवा दूंगी? किसी ने कुछ नहीं कहा। इधर आने वाले किसी आदमी ने कुछ कहा? नहीं तो। तब ये रोना धोना? मैं नहीं जानती बाजी, बस बैठे-बैठे रोना आगया। जा-जा कर काम कर। आज तेरी छुट्टी है। आराम करेगी तो तबीयत ठीक हो जाएगी। यहां छुट्टी का तो कोई तसव्वुर नहीं था। हम कमाने वाली मशीनें थीं। और एक दिन आराम का मतलब हज़ारों का नुकसान था। अमीर बेगम ने हम सब को भारी क़ीमत पर ख़रीदा हुआ था। मेरा ख़ुद भी यही ख़्याल था कि एक दिन आराम से ठीक हो जाऊंगी। मगर अगले दिन भी यही हालत रही। बैठे-बैठे अचानक ख़ुद ब ख़ुद आंसू बहने लगते थे। लेकिन यह स्थिति जस की तस बनी रही तो मैं भी परेशान हो गई। बात अमीर बेगम तक जाती। और सच्ची बात है मुझे उस से बहुत डर लगता था। उसने दूसरी बार बुलाया तो उस के तेवर सच-मुच ख़तरनाक थे। ये क्या ड्रामा है शादो? मैं नहीं जानती, बाजी। कसम से मेरा कोई क़सूर नहीं है। तू रोती है तो क़सूर क्या मेरा है। मैंने कहा ना, मैं नहीं जानती। सच सच बता क्या बात है। डर मत मैं तुझे कुछ नहीं कहूँगी। तब मेरे दिल में ख़्याल आया कि शायद अल्लाह ने मेरे लिए कोई रास्ता निकाला है और तभी अमीर बेगम नरम हुई है, वरना वह नरमी नाम की चीज नहीं जानती थी। मैंने हिम्मत कर के उसे सब बता दिया कि मैंने डाइजेस्ट में क्या पढ़ा था और उस का मुझ पर क्या असर हुआ। अमीर बेगम ग़ौर से सुन रही थी और उस के भाव अजीब से हो रहे थे। वो ख़ासी देर ख़ामोश रही और टहलती रही। मैं फिर डर गई, कि ना जाने उस की क्या प्रतिक्रिया हो। कहीं वो अचानक भोला को बुला के मुझे उस के हवाले ना कर दे। भोला अमीर बेगम का ख़ास आदमी था और तमाम औरतों और लड़कियों की उस से रूह काँपती थी। वो पूरा जल्लाद था। तू क्या चाहती

है। मैं तो ये सुनकर उछल पड़ी। कुछ नहीं जी। देख तेरे अंदर कुछ है तभी तो, तू रोती है। मैं चाहती हूँ, तू रोना धोना बंद कर दे। ये भोले वाला काम नहीं है वर्ना तुझे अभी उस के हवाले कर देती। तू जा कर सोच ले कि तेरे आँसू किस तरह रुक सकते हैं। फिर मुझे बता, अगर मानने वाली बात हुई तो मैं मान लूँगी। वर्ना तुझे आगे किसी को बेच दूंगी। मैं मसले नहीं पालती। अब जा और जा कर सोच। मैं सच्च कह रही हूँ, मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मेरे आँसू कैसे रुकेंगे। मैं सोचती रही और परेशान होती रही कि ना जाने अमीर बेगम मुझे आगे कहाँ बेचेगी। उस रात मैं देर तक जागती रही। यहाँ तक कि सुबह हो गई और अज़ानों की आवाज़ें आने लगीं। अज़ान के बाद किसी ने बाहर ऊंची आवाज़ में रेडियो लगा दिया जिसमें क़ुरान और तर्जुमा (अनुवाद) आ रहा था। उस में ये भी बताया गया कि क़ुरान पढ़ने और समझने की बड़े गुण और फायदे हैं। और हर मर्द या औरत पर फ़र्ज़ है कि वो कुरान पढ़े और उसे समझने की कोशिश करे। तब मुझे ख़्याल आया कि जब अल्लाह मेरे लिए आसानी कर रहा है तो मैं उस का भेज हुआ कुरान क्यों ना पढ़ूं। ये ख़्याल तो मुझे आया लेकिन बहुत अजीब सा लगा क्योंकि ये कोठा था। यहां कुरान पढ़ना तो दूर की बात कोई नमाज़ भी नहीं पढ़ता था। शायद हमें तो ठीक से कलिमा भी नहीं आता था। यहां धर्म और उस की बातों का कोई गुज़र नहीं था। मैंने सोचा, क्या अमीर बेगम मेरी ये बात मानेगी। मगर मैंने सोचा कि वो माने या ना माने मैं तो अपनी बात कर सकती हूँ, हो सकता है उस से मुझे सुकून मिल जाये और मेरे समय समय बहने वाले आँसू रुक जाएं। सुबह जैसे ही अमीर बेगम अपने कमरे से निकली तो मैं उस के पास पहुंच गई। बाजी आपसे बात करनी है और फिर जब मैंने उसे बताया कि मैं क्या चाहती हूँ। तो उस का मुँह खुला का खुला रह गया। तू क़ुरान पढ़ेगी क्या? बाजी मेरी समझ में यही आया है कि शायद अल्लाह का कुरान पढ़ने से मुझे सुकून मिल जाये और मेरे आँसू रुक जाएं। वो सोच में पड़ गई, और मेरी जान पर बन गई। क्यों कि उसने कहा था कि

अगर बात ना मानने वाली हुई तो वो मुझे आगे बेच देगी। तू जा, मैं बाद में बताऊंगी तुझे। मैं उस के कमरे से निकल आई और अब मुझे इंतज़ार था कि वो मेरे लिए क्या फ़ैसला करती है। अगले दिन फ़ज्र के बाद जब सब पड़े सो रहे थे तो भोला ने मुझे जगाया। भोला पहलवान जैसी जसामत का, सूरत से बेवकूफ़ और सादा सा नज़र आने वाला आदमी था। मगर वो ऐसा बिलकुल भी नहीं था। मैं तो उसे देखकर लरज़ गई। चल उठ मेरे साथ चल। मैं काँपती हुई बिस्तर से उठी। बमुश्किल चप्पल पहन कर उस के साथ चल पड़ी। कोई चादर ले-ले। यहां तो हम दुपट्टा भी नहीं लेते थे। हाँ कहीं बाहर जाना होता तो चादर ले लेते थे। और उस का मक़सद भी ये होता था कि कोई जान पहचान वाला हमें देख ना ले। मैंने चादर ओढ़ी मुझे लग रहा था कि अमीर बेगम ने शायद मेरा फ़ैसला यूं कर दिया था कि मुझे किसी के हाथ बेच दिया था। मैं उस समय चौंकी जब मुझे ख़ास बैठक पर ले जाया गया। ये बैठक कोठे में बाहर से आने वाले उन लोगों के लिए मख़सूस थी जो तमाश बीनी या अय्याशी की बजाय किसी और मक़सद से आते थे। और हम औरतों और लड़कियों को वहां जाने की इजाज़त (अनुमति) नहीं थी । वहां एक शख़्स मौजूद था जो हूलिए से मौलवी लग रहा था। मौलवी ये शादो है इसे पढ़ना है। मैं क्या सोच कर आई थी और यहां क्या निकला। अमीर बेगम ने मेरी बात मान ली थी और अब ये मौलवी मुझे क़ुरान पढ़ाने आया था। भोला ये कह कर एक कोने में सोफे पर जा कर बैठ गया। मौलवी जवान था, शायद 27 या 28 बरस की उम्र थी। वो एक सोफे पर बैठा हुआ था, दरम्यान में छोटी सी मेज़ पर कुरान रखा हुआ था और दूसरी तरफ़ मेरे लिए कुर्सी थी। मैं सलाम कर के वहां जल्दी से बैठ गई। तुम्हारा वुज़ू है? नहीं। वुज़ू करना आता है? सच्ची बात ये है कि मुझे वुज़ू करना नहीं आता था। मैंने साफ़-गोई से कह दिया ठीक से नहीं आता। कोई बात नहीं, मैं समझाता हूँ और फिर उसने पूरी वज़ाहत (व्याख्या) से मुझे बताया कि वुज़ू कैसे करते हैं। फिर उसने मुझे कहा कि जाओ पहले इसी तरह वुज़ू

कर के आओ। फिर उसने मुझे बिसमिल्लाह पढ़ना सिखाई। मुझे पता चला कि मुझे तो बिसमिल्लाह भी ठीक से नहीं आती है। आधा घंटा मुझे इसी में लग गया। उसने मुझसे कहा कि मैं दिन भर बार-बार बिसमिल्लाह दुहराती रहूं। और इस तरह मेरी बिसमिल्लाह ठीक हो जाएगी। फिर उसने मुझे ठीक से कलिमा पढ़ना सिखाया। पहला दिन तो इन्हीं दो चीज़ों में गुज़र गया। क़ुरान के लिए मेरी बेताबी महसूस करते हुए उसने मुझे तसल्ली दी, अगर किसी से ये दो चीज़ें सही आजाऐं, तो भी उस के लिए बड़ी बात है। तो फिर कल से मैं क्या क़ुरान पढ़ूंगी? नहीं, अभी तुम्हें नूरानी क़ायदा पढ़ना होगा। इस से तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) ठीक होगा। और इस के बाद क़ुरान शुरू किया जाएगा। ये कहते हुए वो उठ खड़ा हुआ। मेरा नाम अबदुस समद है। तुम मुझे क़ारी साहब कह सकती हो। मेरा नाम शादाँ है। एक बात और कि कल से चादर के साथ नक़ाब (ढाटा) भी लेना। ये कहा और सलाम कर के चला गया। पहले दिन मैंने सिर्फ चादर ली थी। मेरा चेहरा खुला हुआ था। वो मेरे सामने था मगर उसने एक दो बार उचटती हुई नज़र के सिवा मेरी तरफ़ नहीं देखा था। मैं ख़ुश तो बहुत थी लेकिन हैरान भी थी कि अबदुस समद ने इस बदनाम कूचे में आने की हिम्मत कैसे की। हमारे साथ भोला भी बैठा रहा था और मैं हैरान थी कि उस की मौजूदगी का यहां क्या मक़सद है। दूसरे दिन भी भोला आया और तीसरे दिन वो कुछ देर के लिए बाहर चला गया। इस दौरान वो मुझसे और अबदुस समद से कोई बात नहीं करता था। अबदुस समद मुझे पढ़ाता और एक घंटे बाद चला जाता। एक हफ़्ते बाद भोला ने मुझसे कहा, मैं ज़रा काम से जा रहा हूँ। बाजी पूछे तो कहना मैं यहीं था। इनकार की तो मजाल नहीं थी। साथ ही उसने मुझे धमकी भी दी कि अगर बाजी को इस बात का पता चला तो तेरी ख़ैर नहीं। मैं नहीं कहूँगी जी। मैंने उसे यक़ीन दिलाया। उस के बाद से मैं और अबदुस समद अकेले ही होते थे। लेकिन इस के बावजूद उस के अंदाज़ में कोई बदलाव नहीं आया। मैं इतनी तेज़ी से सीख रही थी कि

तक़रीबन हर दो दिन में एक सबक ख़त्म कर रही थी। दूसरे हफ़्ते मैंने सबक़ ख़त्म किया और क़ायदा बंद किया तो अबदुस समद खड़े होने की बजाय बैठा रहा। मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ। जी क़ारी साहिब। तुम कुरान क्यों पढ़ना चाहती हो? मैं नहीं जानती। ऐसा कैसे हो सकता है। इन्सान मामूली से मामूली काम भी करता है तो उसे पता होता है कि वो क्यूँ कर रहा है। ये तो दुनिया का सबसे बड़ा काम है। पता नहीं क्यों अंदर से मेरा मन चाहा। मेरा अंदाज़ा दुरुस्त निकला। यानी अल्लाह ने तुम्हारे दिल में ख़्याल डाला है। तुम कुरान पढ़ना चाहती हो और अब पढ़ोगी। लेकिन तुमने सोचा है कि कुरान पढ़ना ही काफ़ी नहीं होता। बल्कि इस का पालन करके इन्सान को अपना जीवन अल्लाह के बताए हुए तरीक़े पर गुज़ारना भी जरूरी है। मैं समझती हूँ। फिर इस बारे में सोचना ज़रूर। बेकार है। मैं एक क़ैदी हूँ, अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर सकती। ये भी उन लोगों की मेहरबानी है जो मुझे आपसे क़ुरान पढ़ने की अनुमति दे दी है। तब अल्लाह से दुआ करो। जिसने ये आसानी की है वही आगे भी आसानी करेगा। अबदुस समद ने कहा और खड़ा हो गया। मगर इस पर सोचो ज़रूर। तुम्हें ख़ुद को भी बदलना होगा और अपनी ज़िंदगी को भी। मैं जितना इस बारे में सोचती मैं सच-मुच यही ख़्याल करती कि मैं बहुत बेबस हूँ। मैं अपनी मर्ज़ी से इस जीवन में ना तो आई थी और ना ही अपनी मर्ज़ी से इस को छोड़ सकती थी। इस के बावजूद उस की बात ने मेरे ज़हन में एक खिड़की सी खोल दी। अमीर बेगम ने मुझे कुरान पढ़ने की इजाज़त दी और मेरे लिए उस्ताद का बंद-ओ-बस्त भी कर दिया था मगर इस से हट कर उसने मुझे कोई रियायत नहीं दी थी। मेरे दिन रात इसी तरह गुज़र रहे थे जैसे एक तवाइफ़ के गुज़रते हैं। रातें आँखों में गुज़रतीं। और मुझे सुब्ह-सवेरे ही कुरान पढ़ने की तैयारी भी करना पड़ती थी। बस महीने में कुछ दिन होते थे जब फ़ित्री (प्राकृतिक) मजबूरी की वजह से मैं कुरान नहीं पढ़ सकती थी। और मुझे डयूटी से भी छुटकारा मिल जाता था। अगले दिन मैंने अबदुस समद से पूछा अगर मैं

अमल करना चाहूँ तो मैं क्या करूँ। ये तो तुम्हें सोचना है ना, कि क्या सही है और क्या ग़लत, फिर इस पर फ़ैसला करना है कि तुम क्या कर सकती हो। आप मेरी मदद नहीं कर सकते? मैं और क्या कर रहा हूँ, तुम्हारी मदद के लिए ही तो आया हूँ। लोगों को छोड़ो अगर मेरे साथियों को पता चल जाय कि मैं यहां आ रहा हूँ तो वो मुझसे मिलना छोड़ देंगे। मुहल्ले वाले मुझे मुहल्ले से निकाल देंगे। मुझे यहां से कुछ नहीं मिल रहा है। तब मुझे पता कला की अबदुस समद बिना किसी फ़ीस के मुझे पढ़ाने आता था। वाक़ई वो मेरी मदद कर रहा था। तुम ये मत समझना कि मैं एहसान जता रहा हूँ। आदमी अच्छा या बुरा सब अपने लिए करता है। मैं भी अपने लिए कर रहा हूँ। मैं तुम्हें सिर्फ पढ़ा सकता हूँ और बता सकता हूँ कि क्या ठीक है और क्या ठीक नहीं है। फ़ैसला करना और उस पर अमल करना तुम्हारा काम है। और ये तुम्हें ही करना होगा। मुझे डर लगता है। इनसान को सिर्फ अल्लाह से डरना चाहिए। क्योंकि तमाम आसानियां और मुश्किलें उसी की तरफ़ से आती हैं। जब तक कि अल्लाह न चाहे, कोई इनसान ना आपको आसानी दे सकता है और ना ही किसी मुश्किल में डाल सकता है। अबदुस समद की वो बात मेरे दिल पर लगी। मैं ये ज़िंदगी छोड़ना चाहती हूँ। क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं। मैं कैसे इनकार कर सकता हूँ। मेरे बस में जो होगा मैं ज़रूर करूँगा। अचानक भोला अंदर आ गया, उस के तेवर ख़तरनाक थे। उसने शायद हमारी बातें सन ली थीं। उसने गर्दन से पकड़ कर अबदुस समद को उठाया और धाड़ कर बोला, मौलवी तुझे क्या कहा था, अपने काम से काम रखना। मैं अपना काम ही कर रहा हूँ, उसने डरे बग़ैर कहा। यही तो मेरा काम है, लोगों को धर्म के हवाले से अच्छा और बुरा बताना। तू ने अच्छा देख लिया है ना अब बुरा भी देख। भोले ने कहा और मेरी तरफ़ देखकर गुर्राया। दफ़ा होजा, तुझ से बाद में पूछूंगा मैं। पहले इस मौलवी का दिमाग़ दुरुस्त करूँगा। इनका कोई क़सूर नहीं है। मैंने इन से पूछा था तो ये बता रहे थे। तू जाती है या, भोला इतनी ज़ोर से धाड़ा कि मैं

डर से बाहर निकल आई। ऊपर आते हुए मेरे पांव काँप रहे थे। मैं कमरे में आई और बिस्तर पर ढेर हो गई। पता नहीं अब अबदुस समद का क्या अंजाम होगा, और उस के बाद फिर मेरा क्या अंजाम होगा। 2 घंटे बाद मुझे अमीर बेगम ने तलब किया और कहने लगी, बन गई मुल्लानी। तेरा क्या ख़्याल है मैं बेवक़ूफ़ हूँ? नहीं बाजी। चुप कर, मेरी मेहरबानी का तू ने ग़लत फ़ायदा उठाया है। तू ये सब छोड़ना चाहती थी, तुझे याद नहीं कि ऐसी बात करने वालियों का यहां क्या अंजाम होता है। सब याद है। तब, तुझे हिम्मत कैसे हुई मौलवी से ये बात करने की। तू यहां से भागना चाहती है। भाग भी जाती तो तुझे पाताल से ले आते। नहीं जानती कि हमारे चंगुल से कोई नहीं निकल सकता। जानती हूँ, सब जानती हूँ। लेकिन मैं भाग नहीं रही थी और ना भागूँ गी। लेकिन अब ये सब भी नहीं करूँगी। तो फिर भुगतने के लिए तैयार हो जा। मैं तैयार थी। फिर मुझे जो भुगतना पड़ा वो मेरी सोच से भी ज़्यादा था। मेरे ऊपर हिंसा के पहाड़ तोड़े जाने लगे। इस के अलावा यौन शोषण, भूक, प्यास अलग थी। मुझे एक अलग कोठरी में बंद कर दिया गया। और रात को इसी कोठरी में तीन चार दरिंदे आ जाते थे। तकलीफ़ और मुसीबत का ऐसा समुंद्र था जो मेरे चारों तरफ़ था। और उस से कहीं मुक्ति नहीं थी। तीन दिन रात इसी तरह गुज़रे तो मैं मरने के क़रीब हो गई थी। जितने ज़ख़म शरीर पर थे उतने ही आत्मा पर भी लगे थे। ना के बराबर पानी मिला था और खाने का एक कण भी मेरे मुंह में नहीं गया था। अमीर बेगम हर सुबह जब आती तो मुझसे एक ही सवाल करती थी। जब मैं ख़ामोश रहती तो वो चली जाती और यातनाओं का नया दौर शुरू हो जाता। चौथे दिन सुबह मैं नीम बेहोशी की स्थिति में थी कि मुझे लगा जैसे कोई मेरे मुंह में दूध टपका रहा है। भूक और प्यास की बेताबी मुझे होश में ले आई। और मैंने पिलाने वाले से प्याला झपटने की कोशिश की, मगर उस ने पीछे कर लिया। आराम से आराम से कहीं भागा नहीं जा रहा। ये रज़ीया थी, इस जगह की सबसे पुरानी औरत। वो बीस साल से यहां थी

और अब चालीस की हो रही थी। 20 सालों ने उसे खंडहर कर दिया था। और अब उसे कोई तलब नहीं करता था। इस लिए वो दूसरे काम करने लगी थी और अपनी जान छूटने पर ख़ुश थी। आहिस्ता पीना है तूने, तीन दिन से कुछ खाया पिया नहीं है, पेट बर्दाश्त नहीं करेगा। उसने एक प्याला मुझे ख़ासी देर में पिलाया। तो मैं इस काबिल हुई कि अपने पैरों पर खड़ी हो सकूँ। वो मुझे सहारा देकर अमीर बेगम के कमरे तक लाई। क्यों बी-बी दिमाग़ दुरुस्त हुआ। बाजी बात दिमाग़ की नहीं है दिल की है। दिमाग़ कब का मान जाता, पर दिल नहीं मान रहा। लगता है तुझे तीन चार दिन का टीका और लगाना पड़ेगा। आप मालकिन हो, बाजी। मेरे बस में होता तो एक दिन में मान जाती। पर ये मेरे बस में नहीं है। ले जा इसे और इस का ख़्याल रख। रज़ीया मुझे अपने साथ अपने कमरे में ले आई। उसने पहले गर्म पानी से मेरी टिकोर की। और फिर जहां जहां ज़ख़म थे उन पर मरहम लगा कर उसने मुझे दवा दी। दूध के साथ दवा लेकर मैं सौ गई। और जब जागी तो हालत बेहतर थी। रज़ीया ने बताया कि मैं चौबीस घंटे सोती रही थी। वो बार-बार देखती थी कि मैं कहीं मर तो नहीं गई। मुझे ख़्याल आया कि अगर मर जाती तो इस यातना से जान छूट जाती। जो अभी छूटती नज़र नहीं आ रही थी। तीसरे दिन अमीर बेगम ने मुझे तलब किया, तब मुझे ख़्याल आया कि अब आराम ख़त्म और तकलीफ़ें शुरू। तू ने क्या सोचा? कुछ नहीं बाजी। मेरे पास सोचने को क्या है। फ़लसफ़ा ना झाड़। ये बता तू मान रही है या नहीं। मुझे इन तीन दिनों की यातनाओं का ख़्याल आया तो मेरी आत्मा लरज़ गई। मगर जब मैंने सोचा कि अमीर बेगम की बात मान लेने के बाद मुझे वही सब करना होगा जो मैं छोड़ चुकी हूँ, तो मेरे अंदर हौसला आ गया। नहीं जी, मैं किसी सूरत अब ये काम नहीं कर सकती। काम का मसला नहीं है, तो जानती है यहां ऐसे शौक़ीन भी आते हैं जो मुज़ाहमत (प्रतिरोध) पसंद करते हैं और इस की ज़्यादा क़ीमत भी देते हैं। तुझे उनके पास भी भेज सकती हूँ। मैंने कहा आप मालकिन हैं जो चाहे कर

सकती हैं। पर मैं राज़ी ख़ुशी ये काम नहीं कर सकती। अच्छा अगर ये नहीं करेगी तो फिर क्या करेगी। मुझे नहीं पता जी। यहां से निकल कर कहाँ जाएगी? कुछ नहीं पता। किस के सहारे ज़िंदगी गुज़ारेगी। मेरे पास वही जवाब था कि, पता नहीं। जब तुझे कुछ पता ही नहीं है तो इतना बड़ा फ़ैसला कैसे कर लिया? बाजी अल्लाह गवाह है, मैं कुछ नहीं जानती और ना सोचा है। ये भी नहीं सोचा कि तुझे कौन अपनाएगा। यूं मुंह उठा कर यहां से जाएगी तो दो-नंबरयों के हाथ लग जाएगी और वो तुझे एक महीने में ही मार देंगे। आप ठीक कह रही हैं बाजी। पर यहां क्या बुरी है। मैंने ये नहीं कहा कि मुझे यहां तकलीफ़ है, बस अब मैं अपनी मर्जी से ये सब नहीं कर सकती। अगर किसी और के हाथ लगी तब भी अपनी मर्ज़ी से नहीं करूँगी। अमीर बेगम टहलती रही, सोचती रही और फिर उसने मुझे जाने का हुक्म दे दिया। दो दिन और गुज़र गए। रज़ीया ने मुझे सुबह सवेरे जगाया और अमीर बेगम का हुक्म सुनाया, मैं सहमी हुई उस के कमरे में पहुंची तो अपेक्षा के खिलाफ वहां अबदुस समद को पाकर मैं हैरान हुई। उस के चेहरे पर ठीक होते ज़ख़मों के निशान थे। अमीर बेगम ने कहा, शादो इसे जानती है? जी जानती हूँ। ये कैसा आदमी है, अच्छे आदमी हैं। अगर इस के साथ सारी उम्र तुझे रहना पड़े तो रह लेगी? जी बाजी। अरे मैं कोई पहेली नहीं बूझ रही हूँ, सीधा सा सवाल किया है। इस से शादी करेगी। शादाँ के जवाब से पहले मैं कुछ कहना चाहूँगा, अबदुस समद ने बीच में बात काटते हुए कहा। तू भी कह दे। मैं बहुत ग़रीब आदमी हूँ जी। एक कमरे की कोठरी में रहता हूँ। एक वक़्त खाता हूँ, तो दूसरे वक़्त का पता नहीं होता। मेरी गुज़ारा बच्चों को कुरान पढ़ा कर होता है, इस की फ़ीस भी नहीं मांगता। जो कोई दे देता है ले लेता हूँ। अब बोल? अमीर बेगम ने मुझसे कहा। मुझे मंजूर है। मुझे भूका रहना भी मंजूर है और खुले आसमान तले सोना भी। आप भी जानते हैं कि मैं क्या थी, पर अब नहीं हूँ। लेकिन मेरा माज़ी (अतीत)? मुझे इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है, अबदुस समद ने कहा। शायद मैं ही यहां

सबसे ज़्यादा गुनाह-गार हूँ। अमीर बेगम ने उसी समय एक निकाह ख़्वाँ को बुलवाया। मेरा और अबदुस समद का निकाह पढ़वा दिया। इस के बाद उसने मुझे अकेले में बुलवाया। तू यहां से सिर्फ इन तीन कपड़ों में जाएगी, बाक़ी सब यहीं रहेगा। बाजी मैं ख़ुद भी कुछ नहीं ले जा रही। ये मत समझना कि मैंने तुझे माफ़ कर दिया है। ये तेरी सज़ा है और जल्द तुझे पता चल जाएगा। अमीर बेगम गुर्राई, मुझे हर सज़ा क़बूल थी। लेकिन अमीर बेगम का मतलब क्या था उस का पता मुझे कुछ दिन बाद ही चल गया। जब एक शाम मुहल्ले वाले हमारे दरवाज़े पर जमा हुए और उन्होंने अबदुस समद को बाहर बुला लिया। ओए मोलवी! तुझे शरीफ़ समझ कर मुहल्ले में जगह दी थी और तो ये गंद उठा लाया है। मैंने क्या किया? किसी और ने फिर गंदी गाली दी। चकले की गंद ला कर घर में रखी है और कहता है। वो मेरी बीवी है। उस के बारे में किसी को बात करने का हक़ नहीं है। फिर एक चसके लेने वाले ने कहा, मौलवी नाराज़ क्यों होता है, तेरी बीवी ही सही लेकिन इस से पहले इस बाज़ार का माल नहीं थी किया? ना जाने कितनों की बिन ब्याही बीवी रही है ये। कोई शौहर अपनी बीवी के बारे में ऐसी बात नहीं सुन सकता चाहे बीवी मेरे जैसा माज़ी (अतीत) रखने वाली ही क्यों ना हो। अबदुस समद उस से उलझ गया और फ़ौरन 4,5 लोग उस पर टूट पड़े। मैं बाहर आई और उसे बचाने की कोशिश की, तो उन लोगों ने मुझे भी मारा। फिर हमें एक दिन में मुहल्ला छोड़कर जाने की धमकी देकर चले गए। अबदुस समद के कपड़े फट गए थे, नाक में से ख़ून आरहा था। मैं उसे अंदर ले आई। शादो तू बाहर क्यों आई? और वो जो तुझे मार रहे थे? मैंने उस से कहा और कपड़े से उस के ज़ख़म साफ़ करने लगी। अगली सुबह मुहल्ले वाले मस्जिद के एक बड़े साहिब के साथ आए और मुहल्ला छोड़कर जाने को कहा। अबदुस समद उन्हें बताता रह गया कि मैं उस की बीवी हूँ। उस का जो माज़ी (अतीत) था वो अब ख़त्म हो चुका है। मेरी बीवी ने अब तोबा कर ली है, और शरीफ़ औरतों जैसी ज़िंदगी गुज़ार रही

है। मगर वो सुनने के लिए तैयार नहीं थे। वह साहिब कहने लगे, मियां, नाली का कीड़ा भी कभी अपनी असलियत बदलता है, क्या। ये क्या कह रहे हैं साहिब। जब कि आप धर्म की समझ सबसे ज़्यादा रखते हैं और आप अच्छी तरह जानते हैं कि गुनाह-गार के बारे में हमारा धर्म क्या कहता है। वो तो ठीक है मियां लेकिन इनसान को अपने आस पास भी देखना पड़ता है। मैं दो साल से यहां रह रहा हूँ, मुझे मालूम है, मेरे आस-पास क्या हो रहा है। मैं घरों में जाता हूँ, बच्चों को क़ुरान पढ़ाता हूँ, मुझसे ज़्यादा कौन जान सकता है कि आजकल घरों में क्या हो रहा है। अल्लाह का शुक्र है मैं अपनी बीवी से संतुष्ट हूँ। वो उतनी ही शरीफ़ और बा-हया है जितनी कि कोई दूसरी बीवी हो सकती है। वो मेरी इज़्ज़त है। अगर किसी ने उस के बारे में एक लफ़्ज़ भी कहा तो मैं लड़ूंगा। मरूँगा ये मार दूंगा। अबदुस समद के लहजे से मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि वो किस तरह मेरी रक्षा कर रहा था, हालाँकि वो कमज़ोर था। फिर दूसरे भी उस के लहजे से दब गए। कल तक ग़ुर्राने वाले अब शराफत से बात करने लगे। ठीक है तुमने उसे शरीफ़ बना दिया है मगर हम बर्दाश्त नहीं कर सकते कि हमारे मुहल्ले में ऐसी कोई औरत रहे। तुम यहां से चले जाओ। मैं यहां से सिर्फ एक सूरत में जाऊंगा। जब मालिक मकान मुझसे मकान ख़ाली करने को कहेगा। वर्ना किसी को ये अधिकार नहीं। वो भी कह देगा। किसी ने तेज़ लहजे में कहा। अपना बोरिया बिस्तर तैयार रखो। अबदुस समद अंदर आया तो चिंतित था। उसने मुझसे कहा शादो, मालिक मकान भी इन ही की बात मानेगा। और हमसे कोठरी ख़ाली करा लेगा। अल्लाह मालिक है। जिसने ये जगह दी है वो आगे भी जगह देगा। और मैंने कहा था ना तेरे साथ मैं भूकी भी रह सकती हूँ और खुले आसमान तले भी रह सकती हूँ। अबदुस समद ने मुहब्बत से मेरी तरफ़ देखा। मैं जानता हूँ, पर मैं तुझे मुश्किल में नहीं देख सकता। फिर ना जाने क्या हुआ मुहल्ले वालों का व्यवहार किसी क़दर बदल गया और अब वो हमारे दरवाज़े पर नहीं आते थे। मिलना जुलना तो पहले भी कभी

नहीं था मगर अब उन्होंने बिलकुल बाईकाट कर लिया। फिर ये हुआ कि अबदुस समद जहां जहां बच्चों को क़ुरान पढ़ाने जाता था, वहां से उसे जवाब मिलने लगा। वो दस बारह जगहों पर जाता था और मुहल्ले में सब जगह से जवाब मिल गया था। अब सिर्फ चार जगहों पर जाता था क्योंकि वो मुहल्ले से बाहर थीं, इस लिए उन लोगों को पता नहीं था, वर्ना शायद वो भी जवाब दे देते। अमदनी का बड़ा हिस्सा कम हुआ तो सच-मुच खाने के लाले पड़ने लगे। अब तक हम गरीबी में भी ख़ुश थे। उस 10/12 की कोठरी के साथ छोटा सा आंगन था जिसमें एक तरफ़ लैटरीन, ग़ुस्लख़ाना और एक बावरचीखाना था। आंगन कच्चा और कमरे का फ़र्श नीम कच्चा था। उस पर लकड़ी की एक खाट पर हमारा बिस्तर था। मगर मैं कसम खा के कहती हूँ कि हम इस में ही बहुत ख़ुश थे। मगर लोगों से हमारी ख़ुशी बर्दाश्त नहीं हुई। और अब नौबत सच-मुच भूकमरी तक आगई थी। क्यों कि बची हुई आमदनी से तो मकान का किराया ही मुश्किल से अदा हो पता था। शादी के पहले ही दिन अबदुस समद ने मेरा सबक़ वहीं से शुरू किया था, जहां से छूट था। अबदुस समद को अपनी नहीं बस मेरी परेशानी रहती थी। वो बहाने से मुझे खिला देता और ख़ुद भूका रहता। वो मेरी वजह से मुश्किल में आया लेकिन उसने एक बार भी मुझे ताना नहीं दिया, शिकवा नहीं किया। मेरे अतीत को उसने यूं भुला दिया जैसे वो कभी था ही नहीं। मगर लोग नहीं भूले थे। एक महीने बाद एक दिन ऐसा आया कि 24 घंटे से हम दोनों ने कुछ नहीं खाया था, और मैं रो रही थी। मैंने अबदुस समद से कहा, ये सब मेरी वजह से हुआ है। अल्लाह किसी की वजह से किसी पर मुश्किल नहीं लाता। ये उस की कृपा है कि हमें इनसान बनाया है। वह जिस हाल में चाहे रखे। तू ठीक कह रहा है, पर मेरा दिल दुख रहा है। मैं तो तेरे लिए परेशान हूँ। मैं बहुत बार भूका रहा हूँ पर तू तो आराम से थी। लानत हो ऐसे आराम पर। इस से तो भूके रह कर मर जाना बेहतर है। पर मुझे यक़ीन है अल्लाह हमें यूं बर्बाद नहीं करेगा। अबदुस समद शाम के

समय कहीं बाहर गया। पानी पी कर गुज़ारा हो रहा था। और अब पेट पर जैसे बल पड़ने लगे थे। कुछ देर बाद वो ख़ुश ख़ुश वापस आया। उसने हाथ में आटा और सब्ज़ी के थैले पकड़ रखे थे। ये कहाँ से मिला? एक दोस्त मिल गया था पुराना। उस से उधार लिया है। मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया, जल्दी से खाना बनाने लगी। अबदुस समद ने बताया कि वो एक जगह काम की बात भी कर के आया है। 8 घंटे की नौकरी है और चार हज़ार रुपय मिल रहे हैं। मैंने पूछा कि वो जो तू कुरान पढ़ाता है, उस का क्या होगा। तो उसने कहा सच्ची बात है मुझे अच्छा नहीं लगता कि क़ुरान पढ़ा कर लोगों से फैसे लूँ। नौकरी से जो समय बचेगा, उस में तुझे और दूसरों को अल्लाह के लिए पढ़ाऊंगा। ठीक है जैसा तू मुनासिब समझे। अगले दिन से अबदुस समद ने काम पर जाना शुरू कर दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे हमारे मुश्किल दिन शायद ख़त्म हो गए। मुहल्ले वाले भी अब ख़ामोश थे जैसे हमारे हाल पर छोड़ दिया हो। जब अबदुस समद नौकरी पर जाता तो मैं उस के जाने के बाद घर के काम करती, कुरान का सबक़ याद करती। नूरानी क़ायदा मैं ने एक महीने में ख़त्म कर लिया। नमाज़ सीख ली थी। और जरूरी दुआएं याद कर ली थीं। छः कलिमे और चारों क़ुल याद कर लिए थे और अब तीसवां पारा शुरू कर दिया था। अबदुस समद मुझ से कहता तू ज़हीन है, वर्ना ये सब मैंने एक साल में जाकर सीखा था, जो तू ने दो महीने से पहले सीख लिया। उस रोज़ मेरी तबीयत ठीक नहीं थी। अबदुस समद को काम पर भेज कर आराम कर रही थी, कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। कौन है? शादो जी हम हैं। यहां कोई शादो नहीं रहती। अरे दरवाज़ा तो खोलो हम तुम्हारे पुराने जानकार हैं। बहुत समय गुज़ारा है तुम्हारे साथ। उसने कहा और आगे बकवास करने लगा। वो सब नीच बातें थीं जो कोई औरत बर्दाश्त नहीं कर सकती। मुमकिन है मैं अमीर बेगम के कोठे पर होती तो मुझ पर असर भी ना होता। मगर उस वक़्त मैं रोती हुई अन्दर चली गई और कोठरी का दरवाज़ा बंद कर लिया। मगर उस की

घिनौनी आवाज़ मेरे कानों तक आती रही। ज़ोर जोर ज़ोर से चीख़ कर बता रहा था कि पहले वो क्या करता रहा है। मैं रोती रही और अल्लाह को पुकारती रही, वही मेरा मददगार था। पता नहीं किस वक़्त मुझ पर बेहोशी तारी हो गई और जब मुझे होश आया तो कोई दरवाज़ा पीट रहा था। मैं बमुश्किल उठकर बाहर आई तो अबदुस समद आ गया था। वो बेचारा बहुत देर से दरवाज़ा बजा रहा था और चिंतित था। उस के पीछे मुहल्ले वाले भी थे। उसे देखकर मैं फिर रो दी। वो मुझे अंदर ले आया। क्या हुआ शादो। मैंने उसे बताया कि सुबह कोई आया था और उसने दरवाज़े के सामने इतनी बकवास की थी। अबदुस समद का चेहरा ग़ुस्से से लाल हो गया। मगर वो क्या कर सकता था। उल्टा मुहल्ले वालों ने उसे और मुझे दोषी ठहराया, कि हम मुहल्ले का माहौल ख़राब कर रहे थे और हमारी वजह से यहां ऐसे नीच लोग आ रहे थे। अबदुस समद ने भी मुहल्ले वालों को सुनाईं कि क्या वो मर गए थे जो एक आदमी आकर मुहल्ले का माहौल ख़राब कर गया और वो चुप कर सुनते रहे। इस पर कुछ शरीर लोगों ने अबदुस समद को फिर मेरा ताना दिया। मेरा ताना देने पर, मैंने अबदुस समद से कहा कि हमें यहां नहीं रहना। तू कोई और मकान देख ले। मकान आसानी से नहीं मिलता है। तू क्या समझती है, मैं तलाश नहीं कर रहा। मैं कौन सा ख़ुशी से यहां रह रहा हूँ। जहां लोग मुझे यूं देखते हैं जैसे मैं कोई अछूत हूँ। ये सब मेरी वजह से ही है। नहीं शादो इस समाज में सब अमीर बेगम हैं। यहां कोई अच्छा नहीं कर सकता। जो करता है, ये लोग उस का जीना हराम कर देते हैं। उसने ग़ुस्से से कहा। उनके अपने घरों में कितना गंद है ये मुझसे पूछो। मगर ये कि मैं दूसरों पर कीचड़ नहीं उछालता। सिर्फ अल्लाह का ख़ौफ़ मेरी ज़बान रोकता है। मैं उस के लिए खाना लेने उठी तो मुझे चक्कर आगया। अगर अबदुस समद मुझे ना पकड़ लेता तो मैं गिर पड़ती। शादो मैं तुझे डाक्टर के पास ले चलता हूँ। तेरी तबीयत ठीक नहीं है। पर तेरे पास पैसे कहाँ हैं? यहां एक अस्पताल है, वहां

डाक्टर फ़ीस नहीं लेता। मैं खाना खालूँ फिर तुझे लिए चलता हूँ। कुछ इनसानियत रखने वाले डाक्टर वो अस्पताल चला रहे थे। मुझे लेडी डाक्टर ने देखा और कैफ़ियत सुनकर बोली, मेरा ख़्याल है तुम माँ बनने वाली हो। मेरी समझ में कुछ नहीं आया कि इस ख़बर पर क्या प्रतिक्रिया दूँ। सुबह से रो रोकर ख़राब तबीयत, और ज्यादा ख़राब हो गई। घर के हालात सामने थे ऐसे में एक बच्चे की आमद आसान नहीं थी। मैंने अबदुस समद को बताया तो वो बहुत ख़ुश हो गया। क्या वाक़ई तू सच्च कह रही है, शादाँ? हाँ डाक्टर ने शुबा ज़ाहिर किया है, कल फिर बुलाया है। मगर इन हालात में बच्चा? तू बिलकुल चिंता मत कर। जो औलाद दे रहा है वो उस की रोजी पहले ही भेज देगा। मुझे अबदुस समद की इस्तिक़ामत (दृढ़ता) पर रशक आया। वह सारी मुश्किलें बर्दाश्त कर रहा था। दुनिया वालों की बातें और ताने सुन रहा था। मगर उस में ज़रा भी कमज़ोरी नहीं आई थी। बल्कि वो दुनिया से लड़ रहा था। उसने कहा तो मैं भी संतुष्ट हो गई। अगले महीने मालिक मकान किराया लेने आया तो उस ने अबदुस समद से मकान ख़ाली करने को कहा। अबदुस समद ने विरोध किया, क्यों ख़ाली कर दूं। क्या मैं किराया समय पर नहीं देता। बात किराए की नहीं है। आदमी को कुछ और भी देखना पड़ता है। मैंने तुम्हें शरीफ़ आदमी समझ कर मकान दिया था, और तुमने यहां? बस और कुछ मत कहना, तुमने मकान ख़ाली करने को कह दिया है ना। मुझे जैसे ही दूसरा मकान मिला मैं इसे ख़ाली कर दूँगा। एक महीने का समय है। मुझे कल मिला, मैं कल ख़ाली कर दूँगा। अबदुस समद ने उस की मोहलत उस के मुंह पर मारी। और फिर वाक़ई ऐसा ही हुआ। दो दिन बाद अबदुस समद को उस जगह पर एक कमरा मिल गया। जहां वो काम करता था। और उसने मज़ीद दो दिन का किराया देकर मकान ख़ाली कर दिया। अब हम जहां गए वो दूसरी मंज़िल का एक कमरा था। कमरा अच्छा बड़ साफ सुथरा था। लेकिन लैटरीन और ग़ुस्लख़ाने ऊपर थे और वो साझे के थे। हमें सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर जाना

पड़ता था। डाक्टर ने बताया कि मैं उम्मीद से हूँ और उसने जो एहतियातें बताईं उन में सीढ़ियां उतरने चढ़ने से गुरेज़ भी शामिल था। मगर यहां तो दिन में चार पाँच बार ऊपर जाना पड़ता था। मेरी कोशिश होती कि ऊपर कम से कम जाऊं। अबदुस समद की दुकान जहां वो नौकर था उसी बिल्डिंग के नीचे थी। वो जगह उस इलाक़े से दूर थी और यहां कोई जान पहचान वाला भी नहीं था। लोग वैसे ही थे जैसे पुराने मुहल्ले में थे। मगर हमें किसी से मतलब नहीं था। मैं आसपास की औरतों से बहुत कम मिलती। 6 महीने बहुत सुकून से हम यहां रहे। फिर एक दिन दुकान पर आने वाले पुराने मुहल्ले के एक आदमी ने अबदुस समद को देख लिया। और सिर्फ देखा ही नहीं, उसने सब के सामने अबदुस समद से कहा। ओए मौलवी तू यहां आ गया है अब। इन लोगों को तेरे बारे में पता नहीं चला क्या। ये सुनकर दुकान का मालिक और दूसरे लोग चौंक गए। क्या नहीं पता है हमें? ओ जी इस ने शाही मुहल्ले की औरत घर में डाली हुई है। वो मेरी बीवी है। उस के बारे में एक लफ़्ज़ भी मत कहना। ये सूफ़ी उधर हमारे मुहल्ले में भी सबसे लड़ता झगड़ता था। अबदुस समद ग़ुस्से से बेक़ाबू होने लगा तो दुकान के मालिक ने मौक़ा की नज़ाकत समझते हुए, उस शख़्स को वहां से भगा दिया। मगर वो शख़्स जो कुछ बोल गया था वो दसियों लोगों ने सुना था। और शाम तक सारी बिल्डिंग हमारे बारे में जान चुकी थी। रात को अबदुस समद घर आया तो मैं उस की सूरत देखकर समझ गई। कुछ हुआ है? कुछ नहीं खाना ला। उसने खाना खाया और फिर बेदिली से मुझे ख़ुद बता दिया। उसने जो अपमान सह था, उसे बताते हुए उस की आँखों में आँसू आ गए। मेरा दिल चाह रहा था कि ज़मीन फट जाये और मुझे अपने अंदर समा ले। मैं उस के आँसू साफ़ करने लगी। तू तो मुझे हौसला देता है, अगर तू रोएगा तो मैं क्या करूँगी। तू ठीक कह रही है। पर इनसान हूँ, कोई पत्थर नहीं हूँ। कभी कभी तो टूट जाता हूँ ना। क्या अब हमें यहां से भी जाना पड़ेगा? अल्लाह बेहतर जानता है। पता नहीं उसने हमारी

क़िस्मत में क्या लिखा है। जो भी लिखा है हम उस पर राज़ी हैं। देख हमें मुश्किल हुई लेकिन हमें पहले से अच्छा घर मिल गया। तुझे कुरान पढ़ाने के पैसे लेना अच्छा नहीं लगता था। अल्लाह ने तुझे दूसरा रोज़गार दे दिया। हाँ ये तो है। और अब वो औलाद भी देने वाला है। अबदुस समद भी ज़रा संतुष्ट हो गया, वो कुछ देर बाद सो गया, वो सारा दिन काम कर के थक जाता था। मगर मैं जागती रही और सोचती रही कि अब क्या होगा। जिसका पहले से डर था वही हुआ अगले दिन मुहल्ले की औरतें आईं। और वो पूरी तैयारी के साथ आईं थीं। मैं उनकी बातें सुनती रही, जिनमें सिवाए दिल दुखाने के और कुछ नहीं था और उसे अल्लाह की मर्ज़ी समझ कर बर्दाश्त करती रही। जब वो मुझसे कुछ पूछतीं तो मैं यही कहती कि, अल्लाह के लिए अपना जीवन बदला है। मुझे इस का इनाम उसी से चाहिए। इनसानों से सिवाए तकलीफ़ के और कुछ नहीं मिलता। वो यही सोच कर आईं थीं कि मैं उनसे लड़ूँगी। और उनके दिल दुखाने पर उनको अपने घर से निकल जाने को कहूँगी। मगर मैं शांत रही। अंदर से तो मेरा दिल रो रहा था। मगर ऊपर से एक आँसू नहीं निकला। बस मैं अल्लाह को याद करती रही और इसी से मुझे हौसला मिला। अगर मैं उनसे लड़ती तो उनकी योजना कामयाब हो जाती। और फिर हमारे साथ यहां भी वही होता जो इस से पहले हो चुका था। मुझे अपनी परवाह नहीं थी। मगर अबदुस समद अभी नौकरी से लगा था। वो ज़रा सुकून में आया था। और हमें फिर सब कुछ यहां से छोड़कर जाना पड़ता, तो एक-बार फिर वो मुसीबत में पड़ जाता। मैं चाहती थी, कि लोग हमें नापसंदीदा समझ कर ही सही, लेकिन हमें इस जगह अपना तो लें। मगर मैं भूल गई थी कि इन्सान को किसी हाल में चैन नहीं होता। खासतौर से दुष्ट लोगों को किसी इनसान की कमज़ोरी का पता चल जाये, तो वो उसे उछाले बग़ैर नहीं रहते। यहां भी ऐसा ही हुआ। अबदुस समद दुकान पर नौकर था। सारे दिन लोग आते थे और बिल्डिंग वाले भी सौदा उसी दुकान से लेते थे। वो बातों बातों में अबदुस

समद को यूं सुनाकर चले जाते कि वो कुछ कह भी नहीं सकता था। अगर किसी से उलझता तो दुकान के मालिक को अच्छा नहीं लगता। ज़ाहिर है उसे अपनी दुकानदारी प्यारी थी। अबदुस समद बेचारा ख़ून के घूँट पी कर रह जाता। बिल्डिंग में कई ओबाश भी रहते थे, वो जब हमारे दरवाज़े के सामने से गुज़रते तो जान-बूझ कर ऊंची आवाज़ में अश्लील बातें करते या गंदी गालियां देते हुए जाते। मैं अपनी बेबसी पर कुढ़ह कर रह जाती। मैंने बुराई का रास्ता छोड़ दिया था, और कभी कोई बात याद भी आती तो दुख के साथ याद आती थी। सोच कर भी घिन आती थी। अल्लाह गवाह है, मैं इस ज़िंदगी से बहुत ख़ुश थी। मगर लोग ख़ुश नहीं थे। वो हमें बख्शने को तैयार नहीं थे। कभी कभी जब बर्दाश्त से बाहर हो जाता तो अल्लाह से दुआ करती थी, कि वो ही हमारी मदद करने वाला है। इन दिनों मेरी तबीयत वैसे भी ख़राब थी। कोई देख-भाल करने वाला और बताने वाला भी नहीं था। इतनी क्षमता नहीं थी कि हर हफ़्ते या महीने डाक्टर को दिखाया जाये और उस से मशवरा लिया जाये। इस लिए जैसे-तैसे ख़ुद सब कुछ करती थी। और इसी हालत में घर भी देखती थी। अगरचे काम ज़्यादा नहीं था, अकसर तो अबदुस समद ही सफ़ाई कर देता था। कुछ महीने गुज़रे तो मेरा डर कम हो गया, कि हमें यहां से निकाला नहीं जाएगा। लोग भी ज़रा ख़ामोश हो गए थे, क्यों कि हमारी तरफ़ से उनको जवाब नहीं दिया जाता था। लोगों ने माफ़ नहीं किया था, बस यूं समझ लें कि ज़रा थक गए थे, इस लिए पीछे हट गए थे। क्यों कि कुछ दिन बाद यही लोग फिर से हम पर चढ़ दौड़े थे। हमारी बदकिस्मती ऊपर एक जोड़े की सूरत में आई थी। उन्होंने मियां बीवी बन कर यहां एक कमरा किराए पर लिया था। मगर कुछ दिन बाद पता चला कि वो बस नाम के मियां बीवी थे। औरत धंधा करती थी और आदमी उस के लिए ग्राहक लाता था। ऐसी बातें छुपती नहीं हैं। इस पर बिल्डिंग वालों ने हंगामा किया और पुलिस आ गई। मुक़ामी पुलिस, जोड़े की तरफ़-दार निकली, क्यों कि उनकी तरफ़ से उन्हें पैसे जाते

थे। मगर इस मुआमले में बिल्डिंग में रहने वाला एक दो नंबर पत्रकार भी शामिल हो गया। और उसने अपने मतलब की ख़ातिर, उस की ख़बर बना दी। सितम उसने ये किया कि ख़बर में उन मियां बीवी के साथ मेरा और अबदुस समद का ज़िक्र भी नाम लिए बग़ैर कर दिया। इस पर औरत ने बिल्डिंग से निकाले जाने पर हंगामा किया। वो ख़ुद को स्टेज अदाकारा बता रही थी। उसने कहा, तुम लोगों ने शाही मुहल्ले वाली तो यहां बिठाई हुई है और मुझे निकाल रहे हो। इस पर सब की तोपों का रुख हमारी तरफ़ हो गया। और वो लोग भी, जो हमारी शराफ़त के क़ाइल हो गए थे, उनके साथी बन गए जो हमें हर सूरत यहां से निकालना चाहते थे। यही नहीं उन लोगों ने दबाव डलवा कर अबदुस समद को नौकरी से भी निकलवा दिया। यूं माली मुश्किलात के एक नए दौर की शुरूआत हो गई। अल्लाह अल्लाह कर के अभी हमें दो वक़्त की रोटी नसीब हुई थी, कि फिर वही भुकमरी का दौर आगया। बिल्डिंग वाले हमें यहां से निकालना चाहते थे, मगर इस बार हमारे फ़्लैट का मालिक आड़े आया और उसने इनकार कर दिया। उसने बिल्डिंग वालों से कहा, अगर ये अभी कोई ग़लत काम कर रहे हैं तो बताओ, एक मिनट में सामान उठा कर बाहर फेंक दूंगा। मगर ऐसे नहीं निकालूँगा। जब तक ये किराया दे रहे हैं, यहां रह सकते हैं। कोई पहले क्या था इस से मुझे कोई मतलब नहीं। मालिक मकान ज़रा मज़बूत बंदा था, इस लिए बिल्डिंग वाले उस पर एक हद से ज़्यादा दबाव नहीं बना सकते थे। कुछ महीने काम करके अबदुस समद ने कुछ रक़म बचा ली थी, वही उस समय में हमारे काम आई। उसने नौकरी भी तलाश करनी शुरू कर दी थी मगर दो महीने गुज़र गए और उसे कहीं नौकरी नहीं मिली। अब हमारे पास किराया क्या, खाने पीने के लिए भी पैसे नहीं थे। तीसरे महीने मालिक किराया लेने आया और अबदुस समद ने मजबूरी बताई तो उसने कहा देख सूफ़ी, मैंने बिल्डिंग वालों के कहने में आकर तुझे नहीं निकाला। गुनाह सवाब बंदे और ऊपर वाले का मुआमला है। हम कौन होते हैं किसी

को गुनाह-गार बताने वाले। पर ये मुआमला दूसरा है। अगर तू किराया नहीं दे सकता तो मकान ख़ाली कर। देखें मैं हाथ पावं वाला आदमी हूँ। नौकरी तलाश कर रहा हूँ। जैसे ही मिलेगी सबसे पहले आपका किराया अदा करूँगा। मुझे एक महीने की मोहलत और दे दें। मालिक मकान सच-मुच शरीफ़ आदमी था, मान गया। ठीक है, एक महीने और रह ले, मगर एक महीने बाद तू ने ख़ाली हाथ दिखा दिया तो मेरा दो महीने का नुक़्सान हो जाएगा। अगर मैं दो महीने बाद किराया ना दे सका और आपने मुझे निकाल दिया, तब भी, जब भी मेरे पास रक़म आएगी मैं आपका किराया ज़रूर अदा करूंगा। अगर किराया ना अदा कर सका तो ख़ुद ही मकान ख़ाली कर दूंगा। आपको कहना नहीं पड़ेगा। अबदुस समद ने हर मुमकिन कोशिश कर ली मगर उसे नौकरी नहीं मिली। उसने मज़दूरी भी की मगर उस में भी उसे कुछ दिन से ज़्यादा काम नहीं मिला। और जो मिला उस से बमुश्किल खाना मिल पाया। इन चार महीनों में हम दोनों कमज़ोर हो गए थे। खासतौर से अबदुस समद हड्डियों का ढांचा हो रहा था। क्यों कि अगर खाने की कोई चीज़ होती तो वो जिद्द कर के मुझे खिला देता। और मैं भी अपने बच्चे की ख़ातिर मान जाती। पहली तारीख़ आई और अबदुस समद ने फ़्लैट के मालिक के आने से पहले ही सारा सामान समेटा और मुझ से कहा, चल शादो तू ने कहा था ना, अगर मेरे साथ तुझे खुले आसमान तले भी रहना पड़ा, तो तू रह लेगी। हाँ मुझे याद है। तू जहां ले जाएगा चलूंगी, जो कहेगा करूंगी। हम अपना मामूली सा सामान समेट कर वहां से निकल आए। हमें नहीं मालूम था, कि कहाँ जाना है। मैं सातवें महीने से थी। इस हालत मैं मेरे लिए चलना फिरना भी मुश्किल हो रहा था। सीढ़ियां उतर कर, सड़क पर खड़े हो कर, अबदुस समद ने ऊंची आवाज़ से बिल्डिंग वालों से कहा, ख़ुश हो जाओ, हम यहां से जा रहे हैं। तुमने जो किया, उस पर अल्लाह तुम्हें माफ़ करे। और कभी तुम्हें ऐसी मुसीबत में ना डाले। मैंने दबी ज़बान में कहा, तू उन्हें दुआ दे रहा है? हाँ, अपने नबी हज़रत मुहम्मद

की एक सुन्नत अदा करने की कोशिश कर रहा हूँ। जो तकलीफ़ उठा कर भी तकलीफ़ देने वालों को दुआ देते थे। और ये तो हमारे नसीब में था। मैं शर्मिंदा हो गई, तू ठीक कह रहा है। ज़रा दूर एक पार्क था जो किसी ज़माने में पार्क रहा होगा, वहां घने पेड़, झाड़ियाँ और घास फूस थी। हम वहां चले आए और पेड़ों के बीच बैठ गए। कुछ ही देर गुज़री थी कि पार्क का चौकीदार आ गया। कौन है तुम, इस औरत के साथ इधर क्या करता है? भाई मैं बे-घर हूँ और ये मेरी बीवी है। हमारे पास रहने को कोई जगह नहीं है। तो उधर क्या कर रहा है। किसी को रुकने की इजाज़त नहीं। मेरी बीवी माँ बनने वाली है, मैं इसे लेकर कहाँ दर बदर फिरूँ। तुम्हारी मेहरबानी होगी, अगर तुम हमें यहां रहने दो। पठान चौकीदार का दिल पसीजा। यारा, इधर कोई आराम नहीं है, और तुम्हारी बीवी इधर कैसे रहेगा। पता नहीं, पहली बार बे छत के हुए हैं, पर अल्लाह जिस हाल में चाहे रखे। तुम इधर पेड़ों के बीच रहेगी, चौकी-दार ने ख़बरदार किया। इधर से बाहर मत आना। किसी ने देख लिया तो मैं मुश्किल में पड़ जाएगी, मेरी नौकरी जाएगी। हम इसी जगह रहेंगे। अबदुस समद ने उसे यक़ीन दिलाया, उसने तीन नज़दीकी पेड़ों से चादरें बांध कर, कमरे जैसा बना दिया। और ज़मीन पत्तों और दूसरी चीज़ों से साफ़ कर के उस पर दरी और बिस्तर बिछा दिया। उसने मुझसे कहा कि तू यहां पर आराम कर में ज़रा खाने और रिहायश का देखकर आता हूँ। कहाँ से देखेगा, मैंने दुख से कहा। हमारे पास है ही क्या जो मकान ले सकें? मैं आता हूँ नमाज़ का समय भी हो रहा है। मैं अकेली रहूंगी। अल्लाह है ना। ये कह कर वो चला गया और मैं बैठी रह गई। कुछ देर के बाद पर्दे के पीछे से चौकीदार की आवाज़ आई, मौलवी-साहब। वो नमाज़ पढ़ने गए हैं, मैंने जवाब दिया। बहन हम ये पानी का केन लाया है, इधर ज़रूरत होगा। वाक़ई मुझे वुज़ू के लिए पानी की ज़रूरत थी। बहुत शुक्रिया भाई, अल्लाह तुम्हें खुश रखे। वो केन रखकर चला गया। और मैंने वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ी। कुछ देर बाद अबदुस समद आया। वो दो तंदूरी रोटी लाया

था। जिसे हमने पानी से भिगो कर खा लिया, और अल्लाह का शुक्र अदा किया। अगला दिन आया और वो भी गया। इस तरह रहना किस क़दर मुश्किल काम है ये वही लोग समझ सकते हैं जिन पर गुज़री हो। मैं आज सोचती हूँ तो मुझे ताज्जुब होता है, कि वो समय हम ने कैसे गुज़ारा था। सुबह फ़ज्र के वक्त अबदुस समद मुझे अकेला छोड़कर नमाज़ पढ़ने चला जाता, तो मैं उस खुली जगह बिना किसी डर के आराम से सोती थी। कुछ दिन बाद आख़िरी रुपया भी ख़र्च हो गया, अब खाने के लिए कुछ भी नहीं था। दो दिन भूके रहे, फिर चौकी-दार ने हमें खाना भी दिया। मगर वो ख़ुद ग़रीब आदमी था, बाल बच्चों वाला था। हमारे साथ इस से ज़्यादा नहीं कर सकता था। दो दिन थोढ़ा सा मिला बाकी दिन भूके रहे। अबदुस समद मज़दूरी करने जाता तो उस की सेहत देख कर कोई मज़दूरी नहीं देता था। बहुत दर्दनाक और निराश करने वाले दिन थे, मगर हम मायूस नहीं थे। उन्हीं दिनों मैंने कुरान पूरा किया। हम दोनों के पास वक़्त ही वक़्त था और अबदुस समद मुझे कुरान पढ़ाता रहता था। मैंने किसी क़दर सुरीली आवाज के साथ कुरान पढ़ना सीख लिया था। अबदुस समद बहुत ख़ुश था। हमारे पास इस ख़ुशी के मौक़ा पर कुछ नहीं था, तो अबदुस समद जा कर अपना आखिरी जूता बेच कर शीरीनी ले आया और वही हमने खाई, और आस-पास जो मिला उसे भी खिलाई। हमारे पास जो कुछ चीज़ें थीं वो एक एक कर के बिकती रहीं। और ये कोई क़ीमत वाली चीज़ें नहीं थीं। बस ऐसी चीज़ें थीं जो दस, बीस, पच्चास, सौ रुपय में बिक जाती थीं। और हमें एक दो वक़्त खाने का सहारा हो जाता। कई बार भूका रहने के बाद तो ये यकीन होता था कि हमारे हिस्से की रोजी हम तक ज़रूर पहुँचेगी। मगर अब होने वाले बच्चे की चिंता थी। वो इस जगह कैसे आता, उसे तो घर की ज़रूरत थी। मैं और अबदुस समद दोनों इस बारे में चिंतित थे। एक दिन वो फ़ज्र के लिए गया, तो बहुत देर हो गई वापिस नहीं आया। मैं परेशान हो गई। जब सूरज ऊपर हो गया तो मैं ख़ुद उसे देखने के लिए जा रही थी, कि वो आ

गया। उस का चेहरा बिलकुल थका हुआ था। कहाँ रह गया था, मैं तेरी तलाश में निकलने वाली थी। कमज़ोर बंदा हूँ, अपने रब से शिकायतें कर रहा था। मस्जिद में था, फ़ज्र की नमाज के बाद वहीं लेटा तो उठा नहीं गया। फिर रोना आगया और मैंने अल्लाह से कहा, कि अब मुझमें बर्दाश्त नहीं है, मुझसे इस मुसीबत को ख़त्म कर दे। वो ख़त्म करेगा मैं ने उस से कहा। वर्ना मेरे अंदर भी अब हौसला बाक़ी नहीं रहा था। मेरा दिल चाह रहा था कि सबसे पहले ऐसा हो जाएगी, कि सर छिपाने की जगह मिल जाये। और दो वक़्त पेट भरने के लिए किसी की तरफ़ देखना ना पड़े। मेरी तसल्ली पर अबदुस समद रो पड़ा। कब? बहुत जलद। उस समय मैंने सोचा नहीं था, कि बहुत जल्द ये सपना पूरा हो जाए गा। कुछ देर बाद अबदुस समद के दिल का बोझ हल्का हुआ, तो शर्मिंदा हो गया। आज मैं अल्लाह का बहुत नाशुक्रा बन गया था ना। नहीं, तू ने अल्लाह से कहा ना, आदमी उस से कह सकता है, और कौन है, जिस से मन की बात की जाये। उस रोज़ हमारे पास खाने को कुछ नहीं था। दोपहर में, मैं लेटी हुई थी, बाहर तेज गर्मी थी। अचानक बाहर से किसी ने अबदुस समद को पुकारा। तुझे कोई बुला रहा है बाहर, अबदुस समद सो रहा था मैंने उस को उठाया। यहां कौन आ गया, इस जगह का तो किसी को पता नहीं है। रहीम शाह जी, आप। अबदुस समद बाहर गया तो उस की आवाज़ आई। मेरा दिल डूब गया। रहीम शाह हमारा पुराना मालिक मकान था, जिसका दो महीने का किराया हम पर था और हम इसी लिए उस का मकान ख़ाली कर के बग़ैर बताए आ गए थे। और वो हमें ढूंढता हुआ यहां आ पहुँचा था। यही ख़्याल अबदुस समद को आया, उसने कहा शाह जी मुझे आप का क़र्ज़ याद है, मगर आप देख रहे हैं, कि मैं किस हाल में हूँ। क़र्ज़ को छोड़ो यार, मुझे तो अफ़सोस है कि तुम बताए बग़ैर आ गए। कब से तुम्हें तलाश कर रहा हूँ। आज संयोग से मस्जिद में देखा, मगर जब नमाज़ पढ़ चुका तो तुम जा चुके थे। आस-पास तलाश किया तो अल्लाह के एक बंदे ने यहां का पता

बताया। मेरे लिए क्या हुक्म है? अबदुस समद सामान उठाओ और मेरे साथ चलो। मैं तुमसे फ़्लैट ख़ाली कराना नहीं चाहता था, मगर तुम बताए बग़ैर निकल आए। शाह जी मैं यहीं ठीक हूँ, वहां मैं कैसे रहूं, जब लोग मुझे वहां रहने नहीं देते। लोगों को छोड़ो, अगर तुम वहां रहना नहीं चाहते तो मेरे पास और जगहें भी हैं, और तुम्हारे लिए काम भी। मुझे तो यूं लगा जैसे मैं कोई सपना देख रही हूँ। उस शाम हम एक कमरे के दूसरे मकान में मुंतक़िल हो गए। ये मकान रहीम शाह जी की वर्कशॉप के करीब था। उस वर्कशॉप में गाड़ियों की डेंटिंग, पेंटिंग का काम होता था। उसने अबदुस समद को अपने पास नौकर रख लिया। वो अच्छे दिल का इन्सान था, इसी वजह से उसने हम पर चल रहे अत्याचार को महसूस किया। शाह जी ने सिर्फ घर ही नहीं दिया, बल्कि बहुत सा सामान भी दिया, जो हमारे पास नहीं था। इतने दिनों बाद हम आराम से सोए थे। मगर जब दर-ब-दर थे तब भी अल्लाह के शुक्रगुज़ार (आभारी) थे। और जब उसने ये ठिकाना दिया तब भी उस का शुक्रिया अदा करते रहे। अबदुस समद को शाह जी ने एक तनख़्वाह पेशगी दे दी थी। हालाँकि वो अभी काम सीख रहा था। ये नया और मुश्किल काम था, मगर अबदुस समद ने बेपनाह मेहनत की। दूसरे कारीगर जब छुट्टी कर के चले जाते तब भी वो काम में लगा रहता था। उस की मेहनत का नतीजा ये निकला कि कुछ महीने बाद वो सबसे बेहतरीन कारीगर बन गया। शाह जी ने उस की तनख़्वाह सबसे ज़्यादा कर दी। एक महीने बाद अल्लाह ने हमें बेटा दिया। हम इस नेअमत पर बहुत ख़ुश हुए। माली मुश्किल थी क्यों कि हमें क़र्ज़ उतारना था और फिर बच्चे के खर्चे अलग से थे। एक साल में हमने सारा क़र्ज़ उतार दिया। घर में ज़रूरत का सामान आ गया। अबदुस समद काम सीख गया। और जो वो कमाता था वो हमारे गुज़ारे के लिए काफ़ी था। बल्कि इस में से कुछ बचत कर लेते थे। शायद हमारे दिलों में डर था कि यहां भी मेरी पुरानी शौहरत पहुंच गई तो हमें शायद यहां से भी जाना पड़ जाये। मैं मुहल्ले की औरतों से बहुत कम

मिलती थी। फिर मुझे ये ख़्याल भी था कि पहले हम दो थे और अब हमारा बेटा भी था, और अल्लाह आगे भी औलाद देता। अगर इन बच्चों के सामने ये सब होता तो उनकी नज़र में मेरी क्या इज़्ज़त रह जाती और ख़ुद वो आत्म सम्मान खो बैठते। इस लिए यहां सेट हो जाने के बावजूद मेरे दिल में ये था कि हमें यहां से भी जाना है। एक रात यही बात मैंने अबदुस समद से कही तो उसने कहा, अल्लाह की क़सम मुझे भी यही ख़्याल आता है। शादो, मैं इसी लिए ज़्यादा मेहनत कर रहा हूँ कि कुछ रक़म जमा हो जाये और फिर हम यहां से कहीं और चले जाएं हमेशा के लिए, जहां सिवाए अल्लाह के और कोई हमारा जानने वाला ना हो। अबदुस समद को अपना हम-ख़याल पाकर मैं ख़ुश हो गई। वर्ना इस से पहले मैं डर रही थी कि कहीं वो नाराज़ ना हो जाये। कि बार-बार कहीं जाकर सेट होना आसान काम नहीं होता। अकेला आदमी फिर भी गुज़ारा कर लेता है, मगर पूरे घर के साथ ये बहुत मुश्किल काम है। मगर हमें अपने और अपने बच्चों के लिए ये काम करना ही था। मेरा बेटा अब्दुल हमीद 6 महीने का था, कि मैं फिर उम्मीद से हुई और इस बार भी अल्लाह ने बेटा दिया। अगरचे मेरी और अबदुस समद दोनों की इच्छा थी कि बेटी हो। मगर हम अल्लाह की इस नेमत पर राज़ी थे। इन दिनों अबदुस समद को बाहर जाने का मौक़ा मिला। दुबई में एक वर्कशॉप में डेन्ट पेंट के एक माहिर की ज़रूरत थी, मगर तनख़्वाह ज़्यादा नहीं थी। अबदुस समद ने कहा मैं तुझे बुला नहीं सकूँगा। मैं यहां रह लूंगी, मैंने कहा। पर हम बचत तो कर सकेंगे ना। इतना भेज देना जितना अब दे रहा है तू। अबदुस समद राज़ी नहीं था मगर मेरे ज़ोर देने पर मान गया। पासपोर्ट बनवा लिया था। उस का वीज़ा लग कर आ गया, नौकरी शाह जी सिफारिश से लगी थी। और उसने ज़रा भी एतराज़ नहीं किया था कि अबदुस समद उसे छोड़कर क्यों जा रहा है। मैं अंदर से चिंतित थी मगर ऊपर से हौसला दिखा रही थी। और इसी वजह से अबदुस समद जाने पर राज़ी हुआ। उस के जाने के बाद कुछ दिन तो मैंने यूं गुज़ारे

जैसे जीते-जी किसी ने मुझे क़ब्र में डाल दिया हो, ऐसा अकेलापन और डर महसूस होता था। मगर धीरे धीरे आदत हो गई। मैं तीन साल अकेली रही। अकेली यूं कि अबदुस समद साल में बस 15 दिन के लिए ही आता था। दो साल बाद अल्लाह ने बेटी भी दी। और तब भी मैं अकेली थी। माली दिक्कतें नहीं थीं मगर बच्चों के साथ अकेले रहना आसान नहीं था। जैसे-तैसे मैं इस मरहले से भी गुज़र गई। 3 साल बाद अबदुस समद आया तो उसने ख़ुश-ख़बरी सुनाई, बस कुछ महीने और इंतजार कर ले। फिर तुझे और बच्चों को ले जाऊँगा। अरे सच्च? हाँ। मैं जिस वर्कशॉप में काम करता हूँ उस के साथ एक छोटी वर्कशॉप बिक रही है। मैंने जो जमा किया है उस से ख़रीद लूँगा। जैसे ही आमदनी इस काबिल हुई कि तुझे और बच्चों को बुला सकूँ तो फोरन बुला लूँगा। अबदुस समद ने मेरा पासपोर्ट बनवा दिया। उस समय 12 साल से छोटे बच्चों का इंदिराज माँ के पासपोर्ट में होता था। अल्लाह ने करम किया और अबदुस समद के जाने के 6 महीने बाद, मैं और बच्चे उस के पास थे। उसने वहां घर ले लिया था। ये दो बेडरूम वाला फ़्लैट था, जो वहां के लिहाज़ से आम सा था। मगर हमारे लिए किसी महल से कम नहीं था। अबदुस समद का काम अच्छा चल निकला था और इसी वजह से वो हमें वहां बुलाने के काबिल हुआ था। मेरे बेटे अब्दुल हमीद और अब्दुल्लाह स्कूल की उम्र को पहुंच रहे थे। इस लिए अबदुस समद ने उन्हें स्कूल में दाख़िल करा दिया। उस की और मेरी तमन्ना थी कि हमारे बच्चे धार्मिक शिक्षा हासिल करें। मगर वहां हमारे देश वाला सिस्टम नहीं था। इस के बावजूद अबदुस समद ने घर में बच्चों को ख़ुद पढ़ाना शुरू कर दिया। काम से थके-हारे आने के बावजूद वो इस मुआमले में सख़्त रहा था। उस की मेहनत से मेरे दोनों बेटों और फिर बेटी फ़ातिमा ने भी हिफ़्ज़ कर लिया। अब मेरे बेटे बाप के साथ वर्कशॉप भी जाते हैं। स्कूल से आने के बाद वो शाम को वहां होते हैं और काम सीखते हैं। बच्चों के बड़ा होने के बाद हम ने ज़रा बड़ा घर ले लिया। क्यों कि अब

हम बड़ा घर अफोर्ड कर सकते थे। अल्लाह के पहले ही एहसान कम नहीं हैं। मगर उस के एहसानों में कोई कमी नहीं आई, बढ़ते ही जा रहे हैं। अपनी कहानी पढ़ने वालों को सुनाने का मक़सद इन्सान पर अल्लाह की मेहरबानीयां बताना है। बशर्त ये कि वो अल्लाह से ही मांगे और उसी से उम्मीद लगाए। अल्लाह जिसे चाहे सीधा रास्ता दिखाता है।[2]

---

[2]https://www.youtube.com/watch?v=ZBZedINtK3c&t=216s retrieved on 27/10/2022

यह कहानी youtube.com के URDU CENTER PLUS चैनल से ली गई है

एक रूसी लड़की की कहानी

एक दिन एक फ़लस्तीनी नौजवान अपनी माँ और बहनों के साथ किसी रास्ते से गुज़र रहा था, उस वक़्त एक हैरान परेशान लड़की उनकी तरफ़ लपकी और उसने उनसे मदद मांगी, उस की हालत देखकर वो उसे अपने साथ घर ले आए, वहां उसने अपनी दुख भरी कहानी कुछ यूं सुनाई कि वो एक रूसी लड़की है, एक ताजिर नौकरी का झांसा देकर ग़रीब नौजवान लड़कियों को इस देश में लाया करता है और उनको बद-कारी के घिनौने पेशे में लगा देता है। मैं भी कुछ दूसरी लड़कियों के साथ नौकरी के लिए यहां आई थी, यहां आने के बाद उस व्यापारी ने अपना घिनावनी योजना लड़कियों के सामने सखी, उस के नापाक इरादों को भाँप कर मैंने किसी तरह अपना पासपोर्ट उस से निकलवाया और दौड़ती हुई किसी तरह हाइवे पर आगई , यहां ख़ुशक़िसमती से मेरी मुलाक़ात आप लोगों से हो गई। उस की दर्द-भरी कहानी सुनकर उस फ़लस्तीनी ख़ानदान ने उसे अपने घर में पनाह देने का इरादा क्या। वह लोग इस्लाम का परिचय कराने के लिए उसे एक इस्लामी किताबों की दुकान पर ले गए, ताकि वो अंग्रेज़ी ज़बान में कुछ इस्लामी किताबें ख़रीद कर इस्लाम के बारे में सही जानकारी हासिल कर सके। दुकानदार ने बताया, कि जब ये लोग उस लड़की को मेरे पास लाए तो बाक़ी औरतें तो बुर्क़ा में थीं, लेकिन ये रूसी लड़की बुर्क़ा से आज़ाद थी और छोटे कंपड़े पहने हुए थी। वो लोग अंग्रेज़ी ज़बान की कुछ इस्लामी किताबें लेकर चले गए। कुछ महीने बाद वो फ़लस्तीनी नौजवान और रूसी लड़की एक-बार फिर मेरी दुकान पर आए, इस बार वह लड़की पूरे बुर्क़े में थी और उस नौजवान की बीवी बन चुकी थी। उस नौजवान ने बताया कि मेरी बीवी ने बाज़ार में एक औरत को बुर्के में देखा, जिसके शरीर का कोई भी अंग नहीं दिख रहा था। उसे देखकर मेरी बीवी ने पूछा

कि क्या इस के जिस्म में कोई ऐब है? मैंने उसे बताया कि ये औरतें अपने इस कर्म से अललाह को ख़ुश करना चाहती हैं। इस पर मेरी बीवी ने फ़ौरन फ़ैसला किया कि अगर अल्लाह को ये पसंद है तो मैं आज से और अभी से बुर्क़ा पहनूँगी। वो फ़लस्तीनी नौजवान अपनी जीवन साथी के साथ अक्सर इस्लामी किताबें लेने मेरी दुकान आता रहता था। कुछ माह बाद वो दोनों ग़ायब हो गए। 6, 7 महीने बाद वो फ़लस्तीनी नौजवान फिर से मेरी दुकान पर आया, दुकानदार ने इतने दिनों तक ग़ायब रहने की वजह पूछी तो उसने अपनी कहानी कुछ यूं सुनाई। मेरी बीवी के पासपोर्ट की मुद्दत ख़त्म हो चुकी थी, उस के लिए ज़रूरी था कि जहां से पासपोर्ट बना है वहीं से तजदीद (रीनीव) करवाई जाये। उस के लिए हमें रूस जाना था, मेरी बीवी मेरे साथ बुर्क़ा में ही रूस के लिए रवाना हुई। हवाई जहाज़ में सभी लोग हमें तीखी नज़रों से देख रहे थे, थोड़ी देर बाद वो हमारा मज़ाक़ उड़ाने लगे। मगर मेरी बीवी उनकी परवाह किए बग़ैर सुकून से बैठी रही, जब कि मैं बैठा बैठा जलता रहा। रूस में हवाई जहाज़ से उतरने के बाद मेरी बीवी ने कहा कि मेरे घर वाले इस्लाम से बहुत नफरत करते हैं, इसलिए हम एक कमरा किराए पर लेकर उस में रहेंगे और जब पासपोर्ट बन जाएगा, उस के बाद हम उनसे मिलने जाऐंगे। पासपोर्ट ऑफ़िस में मेरी बीवी ने जो फ़ोटो दिया उस में चेहरे के अलावा बाकी शरीर छुपा हुआ था।

अफ़्सर ने कहा हमें ऐसा फ़ोटो दो जिसमें तुम्हारा चेहरा, बाल और गर्दन खुले हों। मेरी बीवी, मेरे कहने के बावजूद अपना बुर्क़ा उतार कर फ़ोटो खिचवाने को तैयार नहीं हुई। अफ़्सर ने शायद हमें टालने के लिए कह दिया, कि तुम्हारी इस मुश्किल को मास्को दफ़्तर में बैठे हुए सेक्रेटरी जनरल ही हल कर सकते हैं। हम लोग मास्को पहुंचे, वहां भी वही रुकावट पेश आई। मेरे समझाने पर भी, मेरी बीवी ने यही कहा कि जब मैं अल्लाह की इच्छा को समझ चुकी हूँ तो कैसे मैं अपना बुर्क़ा उतारूँ और सर खोल कर फ़ोटो बनवाऊं? अफ़्सर ने ग़ुस्से में कहा, जब तक तुम सर खुली तस्वीर

नहीं दोगी, हम ना तुम्हारा पुराना पासपोर्ट वापिस करेंगे, ना नया जारी करेंगे। बीवी ने कहा कि जो लोग अल्लाह से डरते हैं, अल्लाह उनकी जरूर मदद करता है। हम लोग वापिस कमरे पर आगए, रात में जब मेरी आँख खुली, तो मैंने देखा बीवी नमाज़ पढ़ रही है और रो-रो कर अल्लाह से दुआएं कर रही है। सुबह फ़ज्र के लिए मुझे उठाया और कहा कि अल्लाह से दुआ करो, अल्लाह हमारी मुश्किल ज़रूर आसान करेगा। इस के बाद हम पासपोर्ट ऑफ़िस चले गए, अभी हम दाख़िल ही हुए थे, कि एक मुलाज़िम ने मेरी बीवी का नाम पूछा और कहा तुम्हारा पासपोर्ट तैयार हो गया है, फ़ीस जमा करा कर ले जाओ। ये सुनकर मैं हैरान रह गया, मेरे जीवन में इस तरह की घटना पहले कभी पेश नहीं आई थी। अब हम वापिस बीवी के घर वालों से मिलने उनके शहर पहुंचे। उस के भाई बहन और बाप सभी उस को बुर्क़ा में देखकर काफ़ी हैरान थे। वो सब मुझे घर के एक कमरे में बिठा कर दूसरे कमरे में चले गए, दूसरे कमरे से रूसी ज़बान में ज़ोर ज़ोर से बातें करने की आवाज़ें आने लगीं। फिर मैंने अपनी बीवी की ज़ोरदार चीख़ें सुनीं, साथ ही वो सब तेज़ी से मेरे पास आए और बुरी तरह मुझे पीटने लगे। मुझे लगा कि बस अब मैं मरने वाला हूँ, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था, कि मैं क्या करूँ। मैंने दरवाज़ा खोला और बाहर भाग कर अपने कमरे में चला गया। लेकिन मैं अपनी बीवी की तरफ़ से बहुत परेशान था कि कहीं वो उसे मार ना दें, कहीं मेरी बीवी इस्लाम से फिर ना जाये। मुझे अंदेशा होने लगा कि शायद मेरी बीवी अब मुझसे नहीं मिल पाएगी। पूरी रात मैं इसी तरह के ख़्यालात में घिरा रहा, सुबह को हाल मालूम करने अपनी बीवी के घर के पास गया और दूर से ही उस के घर की तरफ़ देखता रहा। उस के तीनों भाई और बाप घर से बाहर निकले और थोड़ी देर में फिर वापिस आ गए। दो दिन इसी तरह गुज़र गए, अब मेरी उम्मीद दम तोड़ने लगी, मैं सोचने लगा शायद मेरी बीवी मर चुकी है। चौथे दिन जब वो चारों अपने काम पर चले गए तो दरवाज़ा खुला और मुझे मेरी बीवी दिखाई दी।

जिसकी नज़रें किसी को तलाश कर रही थीं, मैं दौड़ता हुआ उस के क़रीब गया तो उसे देखकर मेरे हवास गुम हो गए। उस का चेहरा और पूरा जिस्म ख़ून में लत-पत था, उसने एक फटे हुए कपड़े से अपना शरीर ढाँप रखा था। हाथों और पैरों में बेड़ियाँ पड़ी हुई थीं, उसे देखकर मैं रोने लगा। उसने मुझे समझाया और कहा मेरी हालत देखकर परेशान मत हो, अल्लाह का शुक्र है, मैं अभी तक इस्लाम पर क़ायम (अटल) हूँ। और जो मुसीबत मैं झेल रही हूँ वो उस के बाल बराबर भी नहीं, जो हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद, उनके साथियों और उनसे पहले के मुसलमानों ने बर्दाश्त की थीं। तुम कमरे पर मेरा इंतिज़ार करते रहो, अल्लाह से नाउम्मीद मत होना। हो सके तो रात के आख़िरी वक़्त में तहज्जुद की नमाज़ में दुआएं करना, अल्लाह पाक हमारी दुआ ज़रूर सुने गा। मैं अपने कमरे पर वापिस आ गया, तीसरे दिन वो कमरे पर आई और बोली, हमें फ़ौरन ये शहर छोड़ना होगा। मैंने कहा हम फ़ौरन एयरपोर्ट चलते हैं। उसने कहा हम एयरपोर्ट नहीं जाऐंगे, मेरे घर वाले वहां मुझे तलाश करने ज़रूर पहुंचेंगे। हमने टैक्सी ली और 4,5 शहरों को पार करके ऐसे शहर में पहुंच गए, जहां एयरपोर्ट था। वहां से पहली फ्लाइट से अपने देश आ गए। घर आकर मैंने सुकून की सांस ली, मेरी बीवी के जिस्म का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था जो ज़ख़मी ना हो। उसने अपनी आप-बीती मुझे यूं सुनाई, कि जब मैंने अपने घर वालों को व्यापारी की घिनौनी हरकत के बारे में बताया और ये भी बताया कि अब मैं मुसलमान बन चुकी हूँ तो मेरे बाप और भाइयों ने एक ज़बान हो कर मुझ पर चीखना शुरू कर दिया। वह मुझ से इस्लाम छोड़ने को कहते। इनकार करने पर फिर मारना शुरू कर देते।। उन्होंने मुझे एक खंबे से बांध दिया। एक दिन मेरी बहन को मुझ पर तरस आ गया, उसने तुम्हें घर के आस-पास देखा था। मेरी बहन के पास ज़ंजीर की चाबी थी, जिसकी मदद से वो मुझे लैटरीन के समय खंभे से खोल देती थी। उसने भाइयों के जाने के बाद मेरी वो ज़ंजीर खोल दी थी, इस वजह से उस दिन कुछ मिनटों के लिए मेरी

तुमसे मुलाक़ात हो गई थी। इस दौरान मैं अपनी बहन को इस्लाम के बारे में बताती रही तीसरे दिन मेरी बहन भी तय्यार हो गई। मैंने उस से कहा अभी तुम अपने को मुसलमान ज़ाहिर मत करना यहां तक कि मैं आज़ाद हो कर तुम्हारी मदद के काबिल ना हो जाऊं। जिस दिन मैं आज़ाद हुई, उस दिन मेरे बाप और भाइयों ने बहुत ज़्यादा शराब पी रखी थी जिसकी वजह से वो नशे में धुत थे। जब वह लोग मदहोश हो गए तो उस का फ़ायदा उठा कर, भाई की जेब से चाबी निकाल कर मेरी बहन ने मुझे आज़ाद कर दिया। मैं अपनी बहन से ये कह आई हूँ कि इंशाल्लाह जल्द ही मैं तुम्हें लेने आऊँगी। उस नौजवान ने आगे बताया कि मेरी बीवी की हालत बहुत ख़राब थी, इसलिए वापिस आने पर सबसे पहले उस का ईलाज कराया, अल्लाह का शुक्र है अब वो बिलकुल ठीक है। मैं अपने आपको बहुत ख़ुशनसीब समझता हूँ कि अल्लाह पाक ने मुझे ऐसी नेक बीवी दी है।

एक शराबी की आत्मकथा

नोट: ये वाक़िया विषय से संबंधित नहीं है, लेकिन एक बुज़ुर्ग की सच्ची तौबा का वाक़िया है इस लिए यहां ज़िक्र किया जा रहा है|

हज़रत मालिक बन दीनार से उनकी तौबा का क़िस्सा पूछा गया तो उन्होंने कहा,"मैं एक सिपाही था, और शराब का बहुत शौक़ीन था। मैंने एक खूबसूरत बांदी ख़रीदी और मैं उससे बहुत प्यार करता था। उस से मेरी एक बच्ची पैदा हुई। मैं उस बच्ची को भी हद से ज़्यादा प्यार करने लगा। जब वो ज़मीन पर घिसट कर चलने लगी तो मेरे दिल में उस की मुहब्बत और बढ़ गई। वो भी मुझसे बहुत मुहब्बत करने लगी, मगर मैं उस के सामने जब शराब ला कर रखता तो वो आकर खींचा-तानी करके मेरे कपड़ों पर शराब गिरा देती। लेकिन मुहब्बत की वजा से उस को कुछ कहने को दिल न करता। जब उस की उम्र दो साल हो गई तो वो मर गई। मेरे दिल को उस के ग़म ने बीमार कर दिया। जब शाबान की पंद्रहवीं रात (शबे बरात) आई तो मैं शराब के नशे में मदहोश था। मैं ने इशा की नमाज़ भी नहीं पढ़ी थी। मैंने ख़वाब (सपने) में देखा कि सूर फूँका गया और क़ियामत (प्रलय) बरपा हो गई। मुर्दे क़ब्रों से उठ रहे हैं और तमाम जीव जन्तु जमा हो रहे हैं। मैं भी उनमें हूँ। मैंने अपने पीछे एक आहट सुनी। मुड़ कर देखा तो एक बहुत बड़ा अजगर है काले रंग का, आँखें नीली हैं, मुँह खोले मेरी तरफ़ दौड़ा आ रहा है। ख़ौफ़-ओ-दहश्त के मारे मैं तेज़ भागने लगा। रास्ते में एक साफ़ सुथरे कपड़ों वाले बाबा मिले। मैं ने सलाम किया। उसने जवाब दिया। मैंने कहा। "बाबा मुझे इस अजगर से बचाओ”। तुझे अल्लाह बचाए गा, वो बूढ़ा रोने कर कहने लगा। "मैं कमज़ोर और ये अजगर बहुत ताक़तवर है। मेरे बस में नहीं। आगे चलो और भागो, शायद अल्लाह तेरी मदद कर दे। "मैं आगे भागने लगा और ऊंची जगह पर चढ़ गया। उस के दूसरी तरफ़ मैंने जहन्नुम

(नर्क) देखी। उस की भीषण आग देखी। जिस मैं दोज़खी लोग दर्द और पीड़ा से किल्ला रहे थे। क़रीब था कि उस के डर से मैं उस में गिर जाता, मुझे किसी ने आवाज़ देकर कहा। "चलो यहां से। तुम यहां के रहने वालों में नहीं हो"। मैं उस की बात सुन कर वहां से वापिस लौटा, तो अजगर मेरे पीछे था। मैं फिर उसी बाबा के पास आया और कहा। "बाबा मैं ने आप से अनुरोध किया था कि इस अजगर से मेरी जान छुड़ाओ। आपने कुछ नहीं किया। वो बूढ़ा फिर रोने लगा और कहा। "मैं कमज़ोर हूँ, पर तुम इस पहाड़ के पास जाओ, जहां लोगों की अमानतें हैं। अगर तुम्हारी कोई अमानत हो तो वो तुम्हारी मदद करेगी। मैं उधर गया तो देखा, चांदी का एक गोल पहाड़ है और इस में जगह जगह रौशन-दान और खिड़कियाँ हैं जिन पर रेशमी पर्दे लटके हुए हैं। हर खिड़की पर सोने के दो किवाड़ हैं जिन पर मेती जड़े हुए हैं और उस के क़बज़े याक़ूत के हैं। मैं उस पहाड़ की तरफ़ भागा और अजगर मेरे पीछे था। जब मैं पहाड़ के क़रीब पहुंचा तो एक फ़रिश्ते ने आवाज़ दी। "पर्दे हटा दो, दरवाज़े खोल दो और सीधे खड़े हो जाओ। शायद इस ग़रीब की यहां कोई अमानत हो जो इसे इस के दुश्मन से बचाए। मैंने देखा। पर्दे हट गए और दरवाज़े खुल गए और उन रोशनदानों में से बहुत सारे बच्चे मेरी तरफ़ झाँकने लगे। उनके चेहरे चांद की तरह चमक रहे थे। अजगर भी मेरे नज़दीक पहुंच चुका था। मैं हैरान था। इन बच्चों में से एक ने चिल्ला कर कहा। "सब आओ, उस का दुश्मन नज़दीक आ गया है। चुनांचे वो फौज दर फौज बाहर निकलने लगे। अचानक मेरी नजर अपनी बच्ची पर पड़ी जो मर गई थी, वो भी उन में थी। जब उसने मुझे देखा तो रोने लगी और कहा, "हाय ये तो मेरे अब्बा हैं। फिर उसने तीर की तेज़ी के साथ छलांग लगाई और मेरे सामने आ खड़ी हुई। उसने अपना बायां हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा कर मेरा दायाँ हाथ पकड़ लिया और अपने दाएं हाथ से अजगर को दूर हटने का इशारा किया तो वो भाग गया। फिर उसने मुझे बिठाया और मेरी गोद में बैठ गई और अपने दाएं हाथ से

मेरी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगी और कहा। "ए अब्बा जान, क्या पापियों के लिए अभी वो समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र के लिए झुक जाएं। (सूरत हदीद आयत16)। मैं रोने लगा और कहा। "ए बेटी तुम लोग भी कुरान को जानते हो। उसने कहा। "हम तो आपसे भी ज़्यादा कुरान को जानते हैं। मैंने कहा, उस अजगर के बारे में तो कुछ बताओ जो मुझे मारने के दरपे था। उसने कहा, वो आपके बुरे आमाल (बुरे क्रम) थे जिस को आप ने इतना शक्तिशाली बना दिया है और वो आप को जहन्नुम की आग में गिरने की फिकर में था। मैंने कहा, उस बूढ़े बाबा के बारे में बताओ जो रास्ते में मिला था। उसने कहा। "वो आपके नेक अमल (अच्छे क्रम) हैं, जिसे आपने इतना कमज़ोर कर दिया, कि अब वो बुरे क्रम का मुक़ाबला नहीं कर सकता। मैंने कहा, ए बेटी तुम इस पहाड़ी में क्या करती हो। उसने कहा, हम सब वो बच्चे हैं जो बचपन में ही मर जाते हैं। हम यहां क़ियामत तक रहेंगे। तुम्हारे इंतज़ार में हैं। जब तुम आओगे तो हम तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे। मालिक बिन दीनार फ़रमाते हैं, मैं घबरा कर उठा और सुबह को मैंने शराब छोड़ दी और उस की बोतलें तोड़ डालीं और अल्लाह ताला से तौबा की। ये मेरी तौबा का वाक़या है। अल्लाह ताला हम सबको अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

(बहवाला किताब अल तववाबीन[3])

---

[3] https://www.siasat.pk/forums/threads/558346, Retrieved on 30/10/2022

एक अंग्रेज़ लड़की की आश्चर्यजनक कहानी

नोट: ये वाक़िया भी विषय से संबंधित नहीं है, लेकिन बहुत ईमान अफ़रोज़ वाक़िया है इस लिए यहां ज़िक्र किया जा रहा है।

ये वाक़िया तब का है जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने नया नया अवध पर क़बज़ा जमाया था। लखनऊ का कमिशनर एक अंग्रेज़ था जो बड़ा सख़्त था। उस की एक जवान बेटी भी थी, जिस क नाम मैरी था। उसकी बीवी या तो मर चुकी थी या लंदन में रह रही थी और कमिशनर अपनी बेटी के साथ लखनऊ में रहता था। एक दिन कमिशनर की बेटी ने उस से कहा कि वो हिन्दुस्तानी ज़बान सीखना चाहती है। कमिशनर ने सोचा कि ये तो बहुत अच्छी बात है अगर वो भी हिन्दुस्तानी ज़बान सीख जाएगी तो उसे किसी अच्छे पद पर नियुक्त कर दूँगा। उन दिनों भारत की सरकारी ज़बान फ़ारसी हुआ करती थी। कमिशनर ने अपनी बेटी को पढ़ाने के लिए एक आलिम क़ारी इमाम बख़्श को बुलाया। क़ारी साहिब की एक ही शर्त थी, कि लड़की और उनके बीच एक पर्दा होना चाहिए, तब ही वो लड़की को पढ़ाएंगे। क़ारी साहिब ने उस को पढ़ाना शुरू कर दिया, ट्यूशन के दौरान अगर नमाज़ का समय आ जाता तो क़ारी साहिब वहीं पर नमाज़ पढ़ते। जब लड़की अपना सबक़ याद कर रही होती तो क़ारी साहिब ख़ामोश बैठने के बजाय कुरान पढ़ना शुरू कर देते। कारी साहब की आवाज में अल्लाह ने ऐसा असर डाला था कि सुनने वालों का दिल उनकी तरफ़ दिल खिंचा चला जाता। क़ारी साहिब कहते हैं कि एक दिन लड़की ने मुझसे पूछा कि आप नमाज़ में और यूं बैठे-बैठे क्या पढ़ते हैं। क़ारी साहिब ने बताया कि मैं कुरान शरीफ़ पढ़ता हूँ, ये धार्मिक किताब है, मगर तुम क्यों पूछ रही हो। लड़की ने कहा जब आप पढ़ते हैं तो इस की तरफ़ मेरा

दिल खिंचा चला जाता है। मेरी समझ में इस का एक अक्षर भी नहीं आता मगर मेरा दिल करता है कि आप पढ़ते रहें और मैं सुनती रहूं। क़ारी साहिब ने कहा ये मेरी आवाज़ का करिश्मा नहीं, बल्कि कुरान है ही इतना प्रभाव शाली कि खुद ब खुद दिल में उतर जाता है। कुछ दिन गुज़र गए, तो मेरी ने एक दिन बहुत हिचकिचाते हुए मुझसे कहा, कि क़ारी साहिब एक बात कहूं अगर आप बुरा ना माने तो। आप जो पढ़ते हैं मुझे भी दिखाएं। मैंने कहा कि ऐसी बात तुमने कर दी, अगर कमिशनर साहिब को मालूम हो गया तो मुझे मरवा देंगे कि मैं उनकी बेटी का धर्म खराब कर रहा हूँ, या उस को मुसलमान बनने के लिए उकसा रहा हूँ। मेरी ने कहा कि लेकिन ये मुआमला इतना सीरियस नहीं है। मैं फ़ारसी भी तो आपसे पढ़ रही हूँ। जब फ़ारसी सीखने में कोई बुराई नहीं तो अरबी सीखने में भी क्या बुराई है। मैंने कहा तुम्हारा तर्क दरुस्त है मगर क़ुरान एक धार्मिक किताब है। इस को पढ़ाना और तुम्हें समझाना बिलकुल धार्मिक मुआमला हो जाता है। वो चुप हो गई, मैं समझा कि उसने अपने दिल से ख़्याल निकाल दिया है। मगर वो अपनी ज़िद की पक्की निकली। कई दिन बाद उसने फिर वही बात की, उसने कहा, क़ारी साहिब मैं आपसे वाअदा करती हूँ कि इस बात की जानकारी मेरे और आपके अलावा किसी को नहीं होगी और ना कभी कोई आप पर आँच आएगी। मैंने उस को बहुत समझाया। जब मैं हर तरीक़े से उस को समझा कर थक गया, तो फिर मुझे हथियार डालने पड़े। मैंने दिल में कहा, अब अल्लाह ही मालिक है जो उसे मंज़ूर होगा वो हो कर रहेगा। अब वो फ़ारसी के साथ अरबी भी पढ़ने लगी। वह बहुत तेज दिमाग और भावुक थी इस लिए बहुत कम समय में रवानी से कुरान पढ़ने लगी।

कुछ दिन बाद उसने मुझे से एक और बात की। बोली, क़ारी साहिब आप मुझे अपने धर्म में दाख़िल कर लीजिए। मेरे पैरों तले ज़मीन निकल गई। मैंने कहा, मेरी ये तुम क्या कह रही हो। उसने कहा, जो कह रही हूँ। बहुत

सोच समझ कर कह रही हूँ। दिल से तो मैं बहुत पहले मुसलमान हो चुकी हूँ मगर अब मैं बाक़ायदा कालिमा पढ़ कर मुसलमान होना चाहती हूँ।
मैंने कहा, तुम्हें इस का अंजाम पता है। कमिशनर साहिब को पता चल गया तो मेरी बोटी बोटी करवा देंगे और आम मुसलमानों का जीना भी यहां पर दूभर हो जाएगा। तुम मुझे माफ़ करो, ये काम मुझसे नहीं हो सकेगा। जब उसने देखा कि मैं राज़ी नहीं हो रहा तो उसने कहा कि अगर आप ये काम नहीं करेंगे तो मैं शहर की जामा मस्जिद में जाकर मुसलमान हो जाऊँगी और ये बताऊंगी कि क़ारी इमाम बख़्श की सलाह पर मैंने इस्लाम धर्म अपनाया है। मैं बहुत परेशान हो गया। मैंने कहा, अल्लाह के लिए ऐसा ग़ज़ब ना करना। पूरे भारत के मुसलमान अंग्रेज़ों की मारकाट का शिकार हो जाएंगे। खून खराबा शुरू हो जाएगा।
मेरी ने कहा, तो फिर ये काम आप ख़ुद कर दीजिए, किसी को कानों-कान ख़बर नहीं होगी। मेरा वादा है कि आप पर कभी कोई आँच नहीं आएगी। मेरे पास और कोई रास्ता नहीं था। अगर मैं मना करता तो ये लड़की कोई भी क़दम उठा सकती थी। मैंने कहा, तुम ज़िद कर रही हो तो मैं कलिमा पढ़ा दूँगा मगर यही बिनती करता हूँ कि बहुत फूंक फूंक कर क़दम रखना। मैरी ने कहा, आप बिलकुल इतमीनान रखें, मैं अपने मुसलमान होने के बारे में किसी को नहीं बताऊँगी। ना ख़ुद ख़तरे में पड़ूँगी ना आपको ख़तरे में पड़ने दूँगी। मैंने कहा, कल तुम मेरे आने से पहले नहा कर पाक साफ़ कपड़े पहन लेना। उसने कहा ठीक है मैं ऐसा ही करूँगी। लेकिन मैं आपको ये बता दूं कि जब से मैं दिल से मुसलमान हुई हूँ, हमेशा पाक साफ़ ही रहती हूँ और कुरान शरीफ़ भी मैंने हमेशा पाकी की हालत में ही पढ़ा है। अगले दिन फ़ज्र की नमाज़ के बाद मैंने अल्लाह-ताला से बहुत गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी, कि ए अल्लाह मेरी इस काम में मदद फर्मा और हर मुसीबत से बचा। जब मैं ट्यूशन पढ़ाने पहुंचा तो वो तैयार बैठी थी, मैंने कहा पहले ट्यूशन पढ़ लो फिर कलिमा पढ़ लेना। उसने कहा, नहीं क़ारी साहिब,

पहले कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो जाऊं, फिर कुछ लिखूँ पढ़ूंगी। उसने बहुत शौक़ के साथ कलिमा[4] पढ़ा और मुसलमान हो गई। उस के पूरे अस्तित्व से ख़ुशी झलक रही थी। उसने भर्राई हुई आवाज़ में कहा। क़ारी साहिब आपका ये एहसान कभी नहीं भुला सकती। अल्लाह आपको इस का इनाम दे। मैंने उस का इस्लामी नाम फ़ातिमा रखा। अब वो रोज़ाना अपने सबक़ के साथ इस्लामी शिक्षा भी हासिल करती। मुझसे रोज़ पूछती कि एक मुसलमानों को किन किन बातों का पालन करना चाहिए। किन बातों से बचना चाहिए। फिर उसने नमाज़ पढ़ना भी सीख ली और बड़ी पाबंदी से नमाज़ पढ़ने लगी। लेकिन नमाज़ पढ़ते समय दरवाज़े वग़ैरा बंद कर लेती ताकि किसी को पता ना चले।

एक दिन उसने मुझ से कहा, क़ारी साहिब मैं होली प्रॉफिट हज़रत मुहम्मद के बारे में पढ़ना चाहती हूँ। उनके जीवन पर कोई किताब हो तो मुझे लादें। क़ारी साहिब को एक अच्छी किताब मिल गई जो कि अंग्रेज़ी ज़बान में थी, और उस को लाकर देदी। वो बहुत ख़ुश हुई और उसने किताब को बड़े शौक़ से पढ़ना शुरू कर दिया। वो किताब पढ़ने के बाद उस में यह बदलाव आया, कि हज़रत मुहम्मद की एक एक बात और एक एक अंदाज़ उस के दिल में उतर गया। वो उनकी व्यक्तित्व और किरदार से इतनी प्रभावित हुई के उसने ख़ुद को हर संभव तौर पर उनकी आदतों में ढाल लिया। वो एक अंग्रेज़ बाप की बेटी थी, अंग्रेज़ी माहौल में रहती थी मगर उसने बड़ी एहतियात से ख़ुद को इस्लामी तरीक़े पर रखा। वो अकसर हज़रत मुहम्मद के बारे में बातें कुरेद कुरेद कर पूछती और जब उनका ज़िक्र होता है तो उस पर एक बेख़ुदी की कैफ़ीयत तारी हो जाती। हजरत मुहम्मद से ऐसी दीवानावार मुहब्बत मैंने बड़े बड़े बुज़ुर्गों में भी नहीं देखी। कुछ समय बाद फ़ातिमा जब बहुत अच्छी तरह फ़ारसी पढ़ने लगी तो मैंने कहा

[4] कलमे के पूरे शब्द हैं "ला इला हा इल अल्लाह, मुहममदूर रसूल अल्लाह" इस का अर्थ है "अल्लाह के सिवा कोई पूजा के लायक नहीं और मुहम्मद साहब उस के पैग़ंबर हैं।"

अब तुम्हें टीयूशन की ज़रूरत नहीं, इसलिए अब मेरा आना ठीक नहीं है। मगर उसने कहा कि अभी मुझे आपकी मज़ीद ज़रूरत है मुझमें धार्मिक मजबूती नहीं आई है। ये सिलसिला चलता रहा वो फ़ारसी और अरबी भी पढ़ती रही और इस्लामी शिक्षा भी लेती रही। मगर ये सिलसिला उस समय रुक गया जब वो बीमार हो कर बिस्तर से लग गई। बीमारी की शुरूआत मामूली बुख़ार से हुई थी, बेहतरीन इलाज के बावजूद उस की हालत रोज़ बरोज़ खराब होती गई। मैं अकसर उसको देखने के लिए जाता, और उस को दिलासा देता, कि तुम जल्दी अच्छी हो जाओगी। एक दिन वो कहने लगी, कि क़ारी साहिब मेरा समय पूरा हो गया है मुझे किसी तसल्ली की ज़रूरत नहीं। मैंने कहा फ़ातिमा ऐसी बातें क्यों करती हो, इनशाल्लाह बहुत जल्द स्वस्थ हो जाओगी। उसने कहा मुझे तो कोई उम्मीद नहीं, मगर इस बात को छोड़ें और मेरी एक बात ग़ौर से सुनें। अगर मैं मर गई तो मुझे एक अंग्रेज़ की हैसियत से ये लोग अंग्रेज़ों के कब्रिस्तान में दफ़न करेंगे। मगर मैं मुसलमान हूँ, अंग्रेज़ों के कब्रिस्तान में दफ़न होना पसंद नहीं करूंगी। क़ारी साहिब ने कहा मगर ये कैसे मुमकिन है, तुम अंग्रेज़ बाप के अलावा कमिशनर की औलाद हो। कौन उन को इस काम से रोकेगा। उसने कुछ देर सोचा फिर बोली, ऐसा करें उन लोगों को उनके अपने तरीक़े पर अपने कब्रिस्तान में दफ़न करने दें, मगर रात में आपको मेरी मय्यत अंग्रेज़ों के कब्रिस्तान से निकाल कर मुसलमानों के कब्रिस्तान में मुंतक़िल (स्थानांतरण) करना होगी। ये सुनकर मेरी रूह काँप गई, इंतिहाई ख़तरनाक और पेचीदा काम था। मुझे चुप देखकर फ़ातिमा बोली क़ारी साहिब, आपने मुझ पर बहुत एहसान किए हैं ये आख़िरी एहसान भी कर दीजिए। मुझे पता है ये बहुत मुश्किल काम है इस में बहुत ख़तरा है। मगर आप ख़ुद सोचें में एक मुसलमान हूँ और मुझे इस्लामी तरीक़े पर मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफ़न होना चाहिए। मेरी जगह अंग्रेज़ों का कब्रिस्तान नहीं। उसने बहुत इसरार किया बहुत मिन्नतें कीं, मैंने मजबूरी में उस से वादा कर

लिया कि मैं तुम्हारी मर्जी के मुताबिक़ ऐसा ही करूँगा। अभी एक हफ़्ता भी नहीं गुज़रा था कि उसका इंतकाल हो गया। उस की मौत ऐसी नहीं थी कि ढकी छिपी रहती। बाप पर क़यामत टूट पड़ी। इतने मज़बूत आसाब का आदमी भी टूट कर रह गया। मय्यत में लखनऊ में मौजूद अंग्रेज़ों के अलावा मुसलमानों और हिंदूओं ने भी बड़ी तादाद में शिरकत की। मैं भी मरहूमा के उस्ताद की हैसियत से शरीक था। जब कि मेरी शिरकत की इसलिए भी ज़रूरी थी, कि उसने जो मुझे अहम ज़िम्मेदारी सौंपी थी, इस लिए मुझे उसकी क़ब्र की अच्छी तरह पहचान करना ज़रूरी थी। मैंने ख़ूब अच्छी तरह क़ब्र की पहचान कर ली, ताकि रात के अंधेरे में कोई मुश्किल पेश ना आए। क़ारी साहिब कहते हैं, कि फ़ारिग़ हो कर जो मैंने विचार किया तो मुझे ये बात समझ में आई कि ये काम मैं अकेला नहीं कर सकूँगा इस के लिए मुझे कुछ लोगों की ज़रूरत पड़ेगी। बहुत सोचने के बाद मुझे अपना एक करीबी दोस्त हाफ़िज़ अली याद आया, जिस पर मैं भरोसा कर सकता था और जो मेरा साथ दे सकता था। चुनांचे थोड़ी सी हुज्जत के बाद वो तैयार हो गया और अपने एक शागिर्द सुलतान को और एक मज़दूर को भी इस काम के लिए तैयार कर लिया। हम चारों ने पूरी योजना बनाई। तक़रीबन रात के डेढ़ बजे हमने औज़ार और मोमबत्तियां लीं और बाक़ी सामान लेकर अंग्रेज़ों के कब्रिस्तान पहुंच गए, हम जल्द ही फ़ातिमा की क़ब्र पर पहुंच गए और समय गंवाए बग़ैर मोम-बत्ती की रोशनी में उस मज़दूर ने क़ब्र की खुदाई शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद क़ब्र खुल गई तो उस मज़दूर ने हाथ साफ़ किए और कहा कि मैं अंदर जाकर ताबूत से मय्यत निकालता हूँ, ऊपर से सुलतान ने मोम-बत्ती की रोशनी डाली। उस मज़दूर ने मोम-बत्ती लेकर क़ब्र में क़दम रखा और ताबूत का ढकना उठा दिया। उसे एक झटका सा लगा हम लोग कुछ नहीं समझ पाए। उसने ख़ौफ़ज़दा आवाज़ में कहा, ये क्या माजरा है। हमने पूछा क्या हुआ। उसने कहा अंदर देखिए, उसने मोम-बत्ती मय्यत के क़रीब कर दी। जब हमारी निगाहें मय्यत

पर पड़ी तो हम पर हैरत के पहाड़ टूट पड़े, वो कोई मर्दाना लाश थी। हाफ़िज़ ने मुझ से नाराज़गी से कहा तुमने ग़लत क़ब्र खुदवा दी है। मैंने कहा नहीं क़ब्र यही है। उसने कहा अगर क़ब्र यही है तो मय्यत कहाँ है। इतने में वो मज़दूर भी क़ब्र के अंदर से ऊपर आ गया, उसने कहा हाफ़िज़ जी यक़ीनन आपसे कोई ग़लती हो गई है। मगर कोई बात नहीं अंधेरे में भूल चूक हो ही जाती है। जल्दी से असल क़ब्र तलाश कीजिए और फिर हम मोम-बत्ती लेकर आस-पास नई क़ब्र के निशानात तलाश करने लगे। मगर कोई भी नई क़ब्र नज़र ना आई और फिर उस खोदी हुई क़ब्र के सिरहाने लगी तख़्ती पर फ़ातिमा का अंग्रेज़ी नाम भी लिखा था। लिहाज़ा हम इसी नतीजे पर पहुंचे, कि यही क़ब्र फ़ातिमा की है। मगर ये अजीब मुआमला है, कि मय्यत की जगह कोई मर्दाना मय्यत है। मज़ीद तसल्ली के लिए जब हाफ़िज़ क़ब्र में उतरा और ताबूत पर झुक कर मय्यत को देखने लगा तो अचानक शदीद हैरत से उछल कर वो क़ब्र से बाहर आगया और आते ही उसने मुझसे कहा जानते हो ये मय्यत किस की है। क़ारी साहिब ने कहा नहीं। तो वो कहने लगा ये बारह बनकी के नवाब यामीन की लाश है। मैं उसे कई बार बहुत क़रीब से देख चुका हूँ। क़ारी साहिब कहते हैं कि मैंने कहा ये अजीब हैरत की बात है अंग्रेज़ों के कब्रिस्तान में लड़की की जगह मर्दाना मय्यत और वो भी हिन्दुस्तानी मुसलमान की। मुआमला कुछ समझ में नहीं आ रहा। मज़दूर ने कहा मैं जल्दी से क़ब्र बंद कर रहा हूँ और फिर उसने जल्दी जल्दी क़ब्र की मिट्टी बराबर करके उस को पहली हालत में कर दिया। सुबह होने से पहले हम सब अपने अपने ठिकाने पर पहुंच चुके थे और बहुत आश्चर्य चकित थे। इस जिज्ञासा में हम दुबारा आपस में मिले और ये तै पाया कि हमें बारह बनकी जाकर नवाब यामीन की ख़बर लेनी चाहिए। कि सच-मुच उस का इंतकाल हो गया है या वो ज़िंदा है। जब हम बारह बनकी पहुंचे तो हमें उस की हवेली ढूंढने में कोई मुश्किल पेश नहीं आई। हमने उस से मुलाक़ात की इच्छा ज़ाहिर की, तो हमें बताया गया कि

नवाब साहिब का इंतिक़ाल हो गया है और कल ही उनको दफनाया है। हमने अफ़सोस का इज़हार किया और कहा कि वो हमारे मुहसिन थे और हम उनसे मिलने के लिए लखनऊ से आए हैं मगर अफ़सोस कि हमारी क़िस्मत मैं उनसे मुलाक़ात नहीं थी। हवेली के कारिंदे ने कहा आप लोग रात यहीं बसर कीजिए, अगली सुबह सफ़र कीजिएगा। हाफ़िज़ ने कहा कि हमारी बदनसीबी कि उनसे मुलाक़ात नहीं हो सकी मगर हम उनकी क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ना चाहते हैं, क्या आप हमें उनकी क़ब्र तक पहुँचा देंगे। उन्होंने कहा जी ज़रूर क्यों नहीं और एक आदमी की रहनुमाई में हम लोग उनकी क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ने पहुंचे। रात का खाना खाने के बाद हाफ़िज़ ने कहा तुम बेवक़ूफ़ हो, क्या हम यहां सिर्फ फ़ातिहा पढ़ने आए थे। हमने उनकी मौत की पुष्टि तो कर ली मगर अब उनकी मय्यत की तसदीक़ करना बाक़ी है और ये काम हमें आज रात ही करना है। मैंने क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ने का चक्कर इसी लिए चलाया था, ताकि क़ब्र की पहचान कर लूँ। वो मज़दूर जो हमारे साथ था, उसने कहा हमें नवाब साहिब की क़ब्र खोल कर ज़रूर देखनी चाहिए वर्ना यहां आने का मक़सद बेकार हो जाए गा। हम लोग चहलक़दमी के बहाने हवेली से निकल गए। चौकीदार से कहा कि हम लोग रात का लुतफ़ उठाने के लिए ज़रा देर तक सैर सपाटे के बाद वापिस आएंगे। हम लोग कोई ग्यारह साढ़े ग्यारह बजे तक वहां की सड़कों पर घूमते रहे फिर आहिस्ता-आहिस्ता क़ब्रिस्तान की तरफ़ बढ़े। क़ब्रिस्तान वीरान इलाक़े में था और दिन के समय भी वहां पर आवा जाही कम ही रहती थी। हम लोग साज़-ओ-सामान साथ लेकर गए थे। दबे पाँव हम रात बारह बजे के क़रीब क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो गए। मोम-बत्ती की रोशनी में मज़दूर ने जल्द ही नवाब साहिब की क़ब्र खोद ली और हम सब क़ब्र में झुक गए और मोम-बत्ती की रोशनी में अंदर देखने की कोशिश करने लगे। हम पर एक-बार फिर हैरतों के पहाड़ टूट पड़े। क़ब्र के अंदर कफ़न में लिपटा एक इंतिहाई ख़ूबसूरत नौजवान नज़र आरहा था, हमने हैरत से एक

दूसरे को देखा कि ये क्या माजरा है। मज़दूर मोम-बत्ती लेकर मय्यत का अच्छी तरह जायज़ा लेने लगा। क़ब्र के कतबे पर तो नवाब साहिब का ही नाम लिखा हुआ था। मज़दूर ने कहा 20 से 25 साल का ये कोई अरबी नौजवान लगता है, जब कि नवाब साहिब की उम्र 45 से 50 साल के दरमियान थी। हाफ़िज़ ने कहा बस अब तुम बाहर आ जाओ। वो जल्दी से बाहर आ गया और क़ब्र पर मिट्टी डाल कर उस को बंद कर दिया। हम सब ख़ामोश थे और इस बात पर ग़ौर कर रहे थे। कोई किसी से कुछ नहीं कह रहा था। हम हवेली पहुंचे, हाथ मुँह धोया और बिस्तर पर लेट गए। सुबह वापिस हमें लखनऊ आना था। मज़दूर काफ़ी थक गया था, वो लेटते ही सो गया। कुछ देर बाद सुलतान भी सो गया। हाफ़िज़ ने कहा तुम भी अब सो जाओ सुबह वापिस भी जाना है। क़ारी साहिब कहते हैं कि मुझे नींद नहीं आरही थी मैंने उस को कोई जवाब नहीं दिया। मैंने सोने की बहुत कोशिश की मगर, मेरे दिमाग़ में खलबली मची हुई थी। या अल्लाह ये क्या माजरा है, फ़ातिमा की मय्यत उस के ताबूत में नहीं उस की जगह नवाब यामीन की लाश है और नवाब यामीन की क़ब्र में कोई अजनबी नौजवान है जो कि अरबी नसल का है। अगर फ़ातिमा की क़ब्र में नवाब यामीन की लाश थी तो उसूलन नवाब यामीन की क़ब्र में फ़ातिमा की मय्यत होनी चाहिए थी। मगर ऐसा भी नहीं है, फ़ातिमा की मय्यत कहाँ गई मेरे ज़हन में बहुत कश्मकश थी। इन्ही सोचों में पता नहीं कब मुझ पर हल्की सी ऊंघ आ गई। इतने में क्या देखता हूँ, कि कमरे में एक अजीब रोशनी फैल गई है और दरोदीवार से हल्की ख़ुशबू आने लगी। मैंने घबरा कर इधर उधर देखा तो अपने क़रीब ही सफ़ैद धुएं का एक बड़ा सा बादल देखा जो हवा में घुल गया और उस की जगह मुझे फ़ातिमा सफ़ैद कपड़ों में मुसकुराती हुई नज़र आई। उस को देखते ही मैंने कहा, अरे फ़ातिमा तुम्हारे लिए तो मैं बहुत परेशान हूँ। वो मुस्कुराते हुए बोली क़ारी साहिब मुझे आपकी परेशानियों की जानकारी है और मैं आपकी इसी परेशानी और

हैरानी को दूर करने के लिए भेजी गई हूँ। जब लोग क़ब्रिस्तान में मुझे दफन करने के बाद जा चुके तो कुछ लोग मेरी क़ब्र में नमूदार हुए और मेरे शरीर को खाट नुमा किसी चीज़ पर रखा और फिर मुझे यूं लगा जैसे वो मुझे लिए हवा में उड़े जा रहे हों। अचानक मुझे महसूस हुआ कि उन्होंने किसी जगह मेरी खाट रख दी है। अभी वो मेरी खाट रखकर हटे ही थे कि मुझे क़रीब ही कुछ सूफ़ी शक्ल के लोग गोल घेरे की सूरत में बैठे नज़र आए। उनके चेहरों से अजीब तरह की रोशनी निकल रही थी। उनमें से एक ने पूछा, इसे यहां क्यों लाया गया है। उनमें से सबसे ज़्यादा नूरानी सूरत बुज़ुर्ग ने फ़रमाया, मैं इसे देखना चाहता था, क्योंकि इसे मुझ को देखने की तमन्ना थी और ऐसी तमन्ना थी कि इसने उसे रोग बना कर जी को लगा लिया था। किसी दूसरे ने कहा बड़ी भाग्यशाली है, कि इस को देखने तमन्ना आप (हज़रत मुहम्मद) ने की। फ़ातिमा कहने लगी, कि मुझे उनकी बातें सुनकर अंदाज़ा हो गया कि मैं कहाँ हूँ और ये बुज़ुर्ग हस्तियाँ कौन हो सकती हैं। मेरी आँखें बार-बार उनकी बलाएं ले रही थीं और मेरा दिल उनके क़दमों में झुका जा रहा था। मेरे दिल में ख़्याल आ रहा था कि मैं अपनी मंज़िल-ए-मक़सूद को पा चुकी हूँ। ये कह कर फ़ातिमा थोड़ी देर को रुकी। उस समय भी उस पर उसी कैफ़ीयत का असर था। क़ारी साहिब ने पूछा कि तुम्हारी बातों से तुम्हारे ताबूत में मय्यत की ग़ैरमौजूदगी का रहस्य तो मालूम हो गया, मगर उस ताबूत में बारह बनकी के नवाब यामीन की मय्यत और नवाब यामीन की क़ब्र में किसी नौजवान की मीयत का मुआमला समझ में नहीं आया। ये उलट किस ने किया और क्यों किया। फ़ातिमा मुसकुराई और कहने लगी क़ारी साहिब, आपने सुना होगा कि अल्लाह ताला शकर ख़ोरे को शकर देता है। उस रात तीन मरने वालों की मय्यतों को उनकी अपनी क़ब्रों से निकाल कर दूसरी क़ब्रों में मुंतक़िल किया गया। मेरे ताबूत में आपको नवाब यामीन नज़र आया। नवाब यामीन था तो हिन्दुस्तानी, मगर अपने आपको हर समय अंग्रेज़ बनाए रखता था। उस का रहन सहन, उठना बैठना

और तौर तरीक़े बिलकुल अंग्रेज़ों जैसे थे। और वो इस्लामी संस्कृति को नीच या बैक वरड (Backward) समझता था। इस लिए उस को मौत के बाद अंग्रेज़ों के क़ब्रिस्तान में जगह मिली और उस की अपनी क़ब्र में जो नौजवान दफ़न किया गया वो मरा तो मदीना में था। उस की तदफ़ीन जन्नतुल बकी कब्रिस्तान में हुई थी मगर उसे हिन्दुस्तान आने की तमन्ना ज़िंदगी-भर तड़पाती रही। लिहाज़ा, उसे उस की इच्छा के मुताबिक़, जन्नतुल बकी से नवाब यामीन की क़ब्र में मुंतक़िल कर दिया गया। अब आप बख़ूबी समझ गए होंगे कि जन्नतुल बकी में उस अरबी नौजवान की ख़ाली होने वाली क़ब्र मैं किस को जगह मिली होगी। और ये सब कुछ उस अल्लाह के अलावा और कौन कर सकता है जो दिलों के भेद जानता है और जिस से कुछ भी नामुमकिन नहीं[5]।

---

[5] https://www.facebook.com/104067676601237/posts/1239573606383966/

एक शहज़ादे की रोचक कहानी

नोट: ये वाक़िया भी विषय से संबंधित नहीं है, लेकिन बहुत ईमान अफ़रोज़ है इस लिए यहां ज़िक्र किया जा रहा है।

हारून रशीद (अब्बासी खिलाफत का 5 वां बादशाह) का एक बेटा था जिसकी उम्र तक़रीबन 16 साल थी। दूसरी रिवायत में है कि हारून रशीद के उस बेटे का नाम अहमद था। वो ज्यादा तर बुज़ुर्गों की मजलिस (साधु-संतों की सभा) में रहा करता और अकसर क़ब्रिस्तान चला जाता। वहां जा कर कहता, कि तुम लोग हमसे पहले दुनिया में थे, दुनिया के मालिक थे लेकिन इस दुनिया ने तुम्हें नहीं छोड़ा यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में पहुंच गए। काश किसी तरह मुझे ख़बर होती कि तुम पर मरने के बाद क्या गुज़र रही है और तुमसे क्या-क्या सवाल-ओ-जवाब हुए। और अक्सर ये शेअर पढ़ा करता, "मुझे जनाज़े हर दिन डराते हैं और मरने वालों पर रोने वालियों की आवाज़ें मुझे उदास रखती हैं"। एक दिन वो अपने बाप बादशाह की सभा में आया। उस के पास वजीर और अमीर सब मौजूद थे और लड़के के बदन पर एक मामूली कपड़ा और सर पर एक पगड़ी थी। दरबार के लोग आपस में कहने लगे, इस पागल लड़के की हरकतों ने अमीर-ऊल-मोमनीन को दूसरे बादशाहों की निगाह में ज़लील कर दिया है। अगर ख़लीफ़ा इस को नसीहत करे, तो शायद ये इस हाल से बाज़ आजाए। ख़लीफ़ा ने ये बात सुनकर उस से कहा, कि बेटा तू ने मुझे लोगों की निगाह में ज़लील कर रखा है। ये बात सुनकर उस ने बाप को तो कोई जवाब नहीं दिया लेकिन एक चिड़िया वहां बैठी थी, उस से कहा अल्लाह का वास्ता कि जिसने तुझे पैदा किया है तू मेरे हाथ पर आकर बैठ जा।, वो चिड़िया वहां से उड़ कर उस के हाथ पर आकर बैठ गई, फिर कहा जा अपनी जगह वापिस चली

जा, वो चिड़िया हाथ से उड़ कर अपनी जगह वापिस चली गई। इस के बाद उसने कहा, अब्बा जान असल में आप दुनिया से जो मुहब्बत कर रहे हैं उसने मुझे उदास कर रखा है। अब मैंने इरादा कर लिया है, कि मैं आपसे दूर छल जाऊं। ये कह कर वो वहां से चल दिया और अपने साथ सिर्फ एक कुरान शरीफ़ लिया। चलते हुए माँ ने एक बहुत महंगी अँगूठी भी उस को दे दी, कि ज़रूरत के समय उस को बेच कर काम में लाए। वो बग़दाद से चल कर बसरा शहर पहुंच गया और मज़दूरों में काम करने लगा। पूरे हफ़्ते में सिर्फ एक दिन शनिवार के रोज़ मज़दूरी करता और पूरे हफ्ते उस मज़दूरी के पैसे ख़र्च करता और अगले सनीचर को फिर मज़दूरी करने चला जाता। एक दिरहम और एक दानिक (दिरहम का छटा हिस्सा) मज़दूरी लेता। इस से कम या ज़्यादा ना लेता। एक दानिक रोज़ाना ख़र्च करता। अबु आमिर बसरी कहते हैं कि मेरी एक दीवार गिर गई थी। उस को बनवाने के लिए मुझे किसी राज मिस्त्री की तलाश थी। किसी ने मुझे बताया, ये लड़का भी राजगीरी का काम करता है। मैंने देखा कि निहायत ख़ूबसूरत लड़का बैठा है एक कपड़े का थैला पास रखा है और कुरान शरीफ़ देखकर पढ़ रहा है। मैंने उस से पूछा कि लड़के मज़दूरी करोगे। कहने लगा क्यों नहीं, मज़दूरी के लिए तो पैदा ही हुआ हूँ। आप बताएं क्या सेवा मुझसे लेनी है। मैंने कहा, गारे मिट्टी का काम है। उसने कहा एक दिरहम और एक दानिक मज़दूरी होगी और नमाज़ के समय में काम नहीं करूँगा, मुझे नमाज़ के लिए जाना होगा। मैंने उस की दोनों शर्तें मंज़ूर कर लीं। और उस को लाकर काम पर लगा दिया। शाम के समय जब मैंने देखा तो उसने दस आदमियों के बराबर काम किया था। मैंने उस को मज़दूरी में दो दिरहम देना चाहे। उसने शर्त से ज़्यादा लेने से इनकार कर दिया और एक दिरहम और एक दानिक लेकर चला गया। दूसरे दिन फिर मैं उस की तलाश में निकला, वो मुझे कहीं नहीं मिला। मैंने लोगों से तहक़ीक़ की, कि ऐसी ऐसी सूरत का लड़का मज़दूरी करता है क्या किसी को मालूम है कि वो कहाँ मिलेगा। लोगों ने बताया कि

वो सिर्फ़ सनीचर के रोज़ ही मज़दूरी करता है, इस से पहले तुम्हें कहीं नहीं मिलेगा। मुझे उस के काम को देख कर ऐसी हैरत हुई, कि मैंने सनीचर तक के लिए काम बंद कर दिया और सनीचर के दिन फिर उस की तलाश में निकला। वो उसी तरह बैठा कुरान शरीफ़ पढ़ता हुआ मिला। मैंने सलाम किया और मज़दूरी करने को पूछा। उसने पहली वाली दोनों शर्तें बयान कीं। मैंने उस की दोनों शर्तें मन्ज़ूर कर लीं। वो मेरे साथ आकर काम पर लग गया। मुझे इस पर हैरत हो रही थी, कि पिछले हफ़्ते उसने अकेले दस आदमियों के बराबर, किस तरह काम किया था। इस लिए मैं ने छुप कर, कि वो मुझे ना देखे, उस के काम करने का तरीक़ा देखा, तो मैं ये मंज़र देख कर हैरान रह गया, कि वो हाथ में गारा लेकर दीवार पर डालता है और पत्थर अपने आप ही उठ कर एक दूसरे से जुड़ते चले जाते हैं। मुझे यक़ीन हो गया कि ये कोई अल्लाह वाला है, और अल्लाह के वालों की ग़ैब से मदद होती है। जब शाम हो गई तो मैंने उस को तीन दिरहम देना चाहे लेकिन उसने इनकार कर दिया, कि मैं इतने दिरहम का क्या करूँगा, और एक दिरहम और एक दानिक लेकर वहां से चला गया। मैंने एक हफ़्ता फिर इंतज़ार किया और तीसरे हफ़्ते को मैं फिर उस की तलाश में निकला। मगर वो मुझे कहीं ना मिला। मैंने लोगों से मालूम किया, तो एक आदमी ने बताया कि वो तीन दिन से बीमार है, फ़ुलां वीराना जंगल में पढ़ा है। मैंने एक आदमी को पैसे देकर, इस पर राज़ी किया, कि वो मुझे उस जंगल तक पहुंचा दे। वो मुझे साथ लेकर उस जंगल में पहुंचा। मैंने देखा कि वो बेहोश पड़ा है, आधी ईंट का टुकड़ा सर के नीचे रखा हुआ है। मैंने उस को सलाम किया, उसने मुझे जवाब ना दिया। मैंने दूसरी बार सलाम किया, तो उसने आँखें खोलीं और मुझे पहचान लिया। मैंने जल्दी से उस का सर ईंट पर से उठा कर अपनी गोद में रख लिया। उसने सर हटा लिया और कुछ शेर पढ़े जिनमें से दो ये हैं।

“मेरे दोस्त दुनिया की नेमतों से धोके में ना पड़ो, उम्र ख़त्म होती जा रही है और नेमतें सब ख़त्म हो जाएंगी। जब तू कोई जनाज़ा (अर्थी) लेकर क़ब्रिस्तान में जाये तो ये सोचता रहा कर कि तेरा भी एक दिन इसी तरह जनाज़ा उठाया जाएगा। इस के बाद उसने मुझसे कहा, कि ए अबू आमिर जब मेरी रूह निकल जाये तो मुझे नहला कर मेरे इन्ही कपड़ों में कफ़न दे देना। मैंने कहा मेरे प्यारे इस में क्या हर्ज है, कि मैं तेरे लिए नए कपड़े का कफ़न बनाऊँ। उसने जवाब दिया के नए कपड़ों के लिए ज़िंदा लोग ज़्यादा मुस्तहिक़ (योग्य) हैं। ये जवाब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ का भी जवाब है। उन्होंने भी इंतकाल के समय यही फ़र्माइश की थी, कि मेरी इन्हीं दो चादरों में मुझे कफ़न देना और जब उनसे नए कपड़े की इजाज़त चाही गई तो उन्होंने यही जवाब दिया था। लड़के ने कहा कफ़न पुराना हो या नया, वैसे भी गल जाएगा। आदमी के साथ तो सिर्फ उस का क्रम ही रहता है और ये मेरी पगड़ी और लौटा क़ब्र खोदने वाले को मज़दूरी में दे देना। और ये अँगूठी और कुरान शरीफ़, हारून रशीद तक पहुंचा देना और इस बात का ख़ास ख़्याल रखना, कि ये ख़ुद अपने हाथों से उन को देना और ये कह कर देना, कि एक परदेसी लड़के की ये मेरे पास अमानत है। और वो आपसे ये कह गया है, कि इसी लापरवाही और धोके की हालत में आपको मौत ना आ जाए। ये कह कर उस की रूह (प्राण) निकल गई, उस समय मुझे मालूम हुआ, कि ये लड़का तो शहज़ादा था। मैंने उस की वसीयत के मुताबिक़ उस को दफ़न किया और दोनों चीज़ें क़ब्र खोदने वाले को दे दीं और क़ुरान और अँगूठी लेकर बग़दाद पहुंचा। और बादशाह के महल के क़रीब पहुंचा तो देखा कि बादशाह काफला निकल रहा था। मैं एक ऊंची जगह पर खड़ा हो गया, पहले एक बहुत बड़ा लश्कर निकला जिसमें तक़रीबन एक हज़ार घोड़े सवार थे। इस तरह एक के बाद एक दस लश्कर निकले, हर लश्कर में एक हजार घोड़े सवार थे। दसवें लश्कर मैं ख़ुद ख़लीफ़ा हारून रशीद शामिल थे। मैंने ज़ोरदार आवाज़ देकर कहा, ए अमीर-ऊल-मोमनीन,

आपको हज़रत मुहम्मद की रिश्तेदारी का वास्ता, ज़रा मेरी बात सुन लीजिए। मेरी आवाज़ पर उन्होंने मुझे देखा, तो मैंने जल्दी से आगे बढ़कर कहा, मेरे पास ये एक परदेसी लड़के की अमानत है। जिसने मुझे ये वसीयत की थी, कि ये दोनों चीज़ें आप तक पहुंचा दूं। बादशाह ने उनको देखकर पहचान लिया, थोड़ी देर के लिए सर झुकाया, उनकी आँखों से आँसू जारी हो गए। एक दरबान से कहा, कि इस आदमी को अपने साथ रखो जब मैं वापसी पर बुलाऊँ तो मेरे पास पहुंचा देना। जब हारून रशीद वापिस दरबार में आए, तो महल के पर्दे गिरवा कर दरबान से फ़रमाया उस आदमी को बुला कर लाओ, अगरचे वो मेरा ग़म (दुख) ताज़ा ही करेगा। दरबान मेरे पास आया और कहने लगा, ख़लीफ़ा ने बुलाया है और इस बात का ख़्याल रखना कि अमीर पर बहुत गहरा दुख है। अगर तुम दस बातें करना चाहते हो, तो पाँच ही पर ही बस करना। ये कह कर वो मुझे अमीर के पास ले गया। उस समय ख़लीफ़ा बिलकुल अकेले बैठे थे। मुझसे फ़रमाया मेरे क़रीब आ जाओ, मैं क़रीब जाकर बैठ गया। कहने लगे तुम मेरे उस बेटे को जानते हो, मैंने कहा जी हाँ मैं उनको जानता हूँ। कहने लगे वो क्या काम करता था। मैंने कहा गारे मिट्टी की मजदूरी करते थे। कहने लगे क्या तुमने भी उस से मजदूरी करवाई, मैंने कहा कि जी हाँ। कहने लगे तुमको इस बात का ख़्याल ना आया, कि उस की हज़रत मुहम्मद से रिश्तेदारी थी (कि ये लोग हज़रत मुहम्मद के चचा हज़रत अब्बास की औलाद में थे)। मैंने कहा ए अमीर-ऊल-मोमनीन पहले अल्लाह से माफी चाहता हूँ इस के बाद आपसे क्षमा चाहता हूँ, मुझे इस की जानकारी न थी, कि ये कौन हैं? मुझे उनके इंतिक़ाल के पता चला। कहने लगे, क्या तुम ने अपने हाथ से उस को नहलाया था। मैंने कहा, जी हाँ। कहने लगे अपना हाथ लाओ। मेरा हाथ लेकर अपने सीने पर रख दिया और कुछ शेर पढ़े जिनका तर्जुमा ये है। 'ए वो मुसाफ़िर जिस पर मेरा दिल पिघल रहा है, और मेरी आँखें उस पर आँसू बहा रही हैं। ए वो शख़्स जिसका मकान (क़ब्र) दूर है, लेकिन उस का दुख

मेरे क़रीब है। बेशक मौत हर अच्छे से अच्छे ऐश को ख़त्म कर देती है। वो मुसाफ़िर एक चांद का टुकड़ा था (यानी उस का चेहरा) जो ख़ालिस चांदी की टहनी (शरीर) पर था। पस चांद का टुकड़ा भी क़ब्र में पहुंच गया और चांदी की टहनी भी क़ब्र में पहुंच गई। इस के बाद हारून रशीद ने बसरा उस की क़ब्र पर जाने का इरादा किया। अबू आमिर उन के साथ थे। उस की क़ब्र पर पहुंच कर हारून रशीद ने कुछ शेर पढ़े जिन का तर्जुमा ये है 'ए वो मुसाफ़िर जो अपने सफ़र से कभी नहीं लौटेगा। मौत ने कम उमरी के ज़माने में ही उस को उचक लिया। ए मेरी आँखों की ठंडक, तू मेरे लिए दिल का चैन था, लाँबी रातों में भी और छोटी रातों में भी। तू ने मौत का वो पियाला पिया है, जिसको जल्द ही तेरा बूढ़ा बाप बुढ़ापे की हालात में पिएगा। बल्कि दुनिया का हर आदमी उस को पिएगा। चाहे वो जंगल का रहने वाला हो, या शहर का रहने वाला हो। पस सब तारीफ़ें उसी अल्लाह के लिए हैं जिसकी लिखी हुई किस्मत के ये करिश्मे हैं।

अब्बू आमिर कहते हैं, इस के बाद जो रात आई तो मैं अपनी तसबीह (जाप) पूरी करके लेटा ही था, कि मैंने सपने में एक नूर का कमरा देखा जिसके ऊपर बदल की तरह नूर ही नूर फैल रहा था। उस नूर के बदल में से उस लड़के ने मुझे आवाज़ देकर कहा। ए अबू आमिर, अल्लाह ताला तुम्हें जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। तुमने मुझे दफन किया और मेरी वसीयत पूरी की। मैंने उस से पूछा कि मेरे प्यारे तुझ पर क्या हाल गुज़रा। कहने लगा, मैं ऐसे मौला की तरफ़ पहुंचा हूँ जो बहुत करीम है और मुझसे बहुत राज़ी है। मुझे उस मालिक ने वो चीज़ें अता कीं जो ना कभी किसी आँख ने देखें, ना कान ने सुनीं, ना किसी आदमी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा। इस तरह की एक हदीस में हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद फ़रमाते हैं कि तौरात में लिखा है कि अल्लाह ताला ने तहज्जुद की नमाज पड़ने वालों के लिए जन्नत में वो चीज़ें तैयार कर रखी हैं, जो ना किसी आँख ने देखीं, ना कान ने सुनीं, ना किसी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा, ना उनको कोई मुक़र्रब

फ़रिश्ता जानता है, ना कोई नबी और पैग़ंबर जानता है। जैसा कि क़ुरान में है किसी शख़्स को ख़बर नहीं जो आँखों की ठंडक का सामान लोगों के लिए जन्नत में मौजूद है। इस के बाद उसने कहा अल्लाह ताला ने क़सम खाकर फ़रमाया है कि जो भी दुनिया से इस तरह निकल आए जैसे में निकल आया उस के लिए यही भव्य स्वागत और इनामात हैं, जो मेरे ऊपर हुए।[6]

[6] हिकायत अल सालिहीन सफा 67।

सम्बंधित बहनों से छोटी सी विनती

इस किताब का मक़सद उन हज़ारों बहनों को जो इस पेशे से जुड़ी हुई हैं, एक मिसाल दिखाना है कि अगर इनसान अल्लाह से सच्ची तौबा कर ले और अपना गुनाहों वाला जीवन छोड़ कर अपने बनाने वाले अल्लाह को खुश करने में लग जाए जाये, तो वो कितना क़ीमती बन जाता है। जी चाहता है, कि ऐसी बहनों की जाकर ख़ुशामद की जाये और उनको इस बात पर आमादा किया जाये कि वो इस गंदे पेशे को छोड़कर कोई दूसरा जायज़ पेशा इख़्तियार करलें। क्या अल्लाह की इतनी बड़ी धरती पर आपको कोई दूसरा अच्छा रोजगार नहीं मिल सकता। अगर इनसान हिम्मत करे तो क्या नहीं कर सकता। इस से ज़्यादा औरत की बेइज़्ज़ती और क्या हो सकती है, कि वो अपने को उन गंदे आदमियों के हवाले कर दे जो इतने गंदे हैं कि अगर इस्लामी निज़ाम हो तो ऐसे लोगों को पत्थरों से मार मार कर क़तल करने का हुक्म है। ये लोग ज़मीन पर रहने के लायक़ ही नहीं हैं, जो अपनी सोच के एतबार से ख़िंज़ीर (जनावर) से ज़्यादा गए गुजरे हैं। तो मेरी प्यारी बहनों आप अपने को ऐसे नापाक मर्दों के हवाले कर के अपना इतना अपमान क्यों करती हो। आपकी भी कोई इज़्ज़त है, आपका भी कोई ख़ानदान है। आप भी किसी की बेटी हो, बहन हो। आप ख़ुद को तो दुख दे ही रही हो, अपने साथ अपने क़रीबी रिश्तेदारों को भी दुख दे रही हो। क्या गुज़रती होगी आपके माँ, बाप, बहन, भाइयों के दिल पर। हाँ किसी की माँ बहन भी इस पेशे से जुड़ी है तो बात अलग है, उनको क्या एहसास होगा। क्या कभी आपको मरना नहीं है क्या अल्लाह के सामने मुंह नहीं दिखाना है। वो क्या वक़्त होगा जब आपके शरीर पर साँप बिच्छू चिपट रहे होंगे और डस रहे होंगे जिसकी तकलीफ़ से बड़े से बड़ा

पहलवान भी तिलमिला उठेगा। ख़ुदा रा, उस दिन के आने से पहले तौबा कर लें और सीधा रास्ता इख़्तियार कर लें। ऐसा नहीं, कि मैं बहुत नेक आदमी हूँ और आपको नसीहत कर रहा हूँ बल्कि मैं भी एक गुनाहगार आदमी हूँ मगर एक कसक है दिल में कि काश में अपनी बहनों की खुशामद कर के, इस गंदी दल दल में से उन्हें बाहर निकाल लाऊँ, लेकिन ऐसी जगह पर हम लोगों का जाना भी आसान नहीं है। इस लिए ये छोटी सी किताब लिखी है जिसमें, अल्लाह की उन नेक बंदियों के वाकयात जमा किए हैं जिन्होंने तौबा की और इस पेशे से निकल गईं और अल्लाह की प्यारी बंदी बन गईं ताकि हम लोगों को भी उनके नक़्श क़दम पर चलने की तौफीक मिल सके और किसी के पास यह बहाना बनाने का मौक़ा ना रहे, कि हम कैसे निकलते हम तो बुरी तरह फंसे हुए थे। यक़ीनन इस पेशे से जुड़ी ज़्यादा-तर औरतें यही कहती हैं कि हम ख़ुद अपनी मर्ज़ी से नहीं आए, हमें तो इस में ढकेला गया है और ये बात बिलकुल सही भी है, कि ज़्यादा तर औरतें इस पेशे मैं ख़ुद नहीं आतीं बल्कि धोके से उनको इस में फँसाया जाता है। उनकी मासूमियत और भोलेपन का फ़ायदा उठा उनको गलत रास्ते पर लाया जाता है। फिर जब वो फंस जाती है तो ख़ुद ही उसे लगने लगता है कि अब मैं कहाँ जाऊंगी अब मुझे कौन अपनाएगा, अब तो मुझे घर वाले भी घुसने नहीं देंगे। इस लिए ये पेशा उस की मजबूरी बन जाता है। लेकिन क्या ये बहाना क़यामत के दिन भी चलेगा, कि हम अपनी मर्ज़ी से नहीं गए थे, इस लिए हमें माफ़ कर दिया जाये। ये इस लिए नहीं चलेगा, क्यों कि आप इस में से निकल भी सकती थीं जैसे और दूसरी हज़ारों औरतें निकल चुकी हैं और उनमें से कुछ के वाकयात ऊपर भी बयान किए गए। तो ये बहाना तो अल्लाह के यहां चलेगा नहीं, क्यों कि जब आपको इस पेशे में धकेला गया था तब आप मासूम और अनजान थीं लेकिन अब मासूम नहीं हैं, ना ही अनजान हैं। अब आप अच्छे बुरे की तमीज़ रखती हैं और बाहर निकलने का रास्ता भी मौजूद है बस थोड़ी सी

हिम्मत की ज़रूरत है। इसी के साथ ही नमाज़ों का पाबंदी करें और अल्लाह से मांगें, कि ए अल्लाह मुझे इस दलदल से निकाल ले। इनशाल्लाह, अल्लाह ज़रूर मदद करेगा। और ख़ुद को इस्लामी माहौल से जोड़ें, इस्लामी लिटरेचर पढ़ें, कुरान की तफ़सीर पढ़ें, अल्लाह-वालों और नेक दीन-दार लोगों के माहौल से जुड़ें। अगर आस-पास औरतों का इजतिमा होता हो तो उस में जाया करें, किसी अल्लाह वाले और नेक आदमी या औरत की मजलिस में बैठने और सुनने का मौक़ा मिलें तो उस में शरीक हों। नेक लोगों के वाकयात पढ़ें इस से दिल पर जल्द असर होता है। और ये ना सोचें कि जल्द से जल्द इस पेशे को छोड़ना है बल्कि फ़ौरन इस को छोड़ दें, आज के बाद कोई ग़ैर मर्द हमारे क़रीब ना आसके हमारे शरीर को हाथ ना लगा सके। और आज से ही उनसे पर्दा करें, क्यों कि मौत का कुछ पता नहीं कब आजाए। अपना घर बसाने की कोशिश करें और जल्द से जल्द निकाह कर लें। क्या पता अल्लाह ताला आप को नेक औलाद अता फ़रमाए और ये नीयत भी रखें, कि अगर अल्लाह औलाद देगा तो उस की इस्लामी तरबियत करेंगे और उसे नेक बनाने की कोशिश करेंगे। आप अपना आइडीयल हज़रत फ़ातिमा, हज़रत आईशा, हज़रत मरयम, हज़रत ख़दीजा और दीगर सहाबियात को बनाएँ जिनकी तारीफ़ अल्लाह और इस के रसूलﷺ ने भी की है। ये ज़िंदगी बहुत लंबी नहीं है, बल्कि बहुत छोटी है। इस में अगर थोड़ी परेशानी भी आ जाये तो उसे बर्दाशत कर लेना चाहिए, इनशाल्लाह मरते ही हमारे मज़े शुरू हो जाऐंगे। अल्लाह हमें अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आमीन